ॐनमः सिद्धेभ्यः।

यति श्रीस्वरूपचन्द्रजी विरचित

चौसठ ऋद्धि पूजा।

अर्थात्

बृहत् गुर्वावलि पूजा शांतिक विधान।

प्रकाशक

जैनसाहित्यप्रसारक कार्यालय,

हीराबाग, गिरगांव—बम्बई।

प्रथम संस्करण।

कार्तिक सुदी वीर नि० स० २४४७।

मूल्य बारह आने।

प्रकाशक—
नदयलाल काशलीवाल
और
बिहारीलाल कठनेरा,
मालिक—
जैनसाहित्यप्रसारक कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव—बम्बई।

मुद्रक—
अनंत बाळकृष्ण घगवे,
'श्रीसरस्वती' मुद्रणालय, बोरभाट लेन,
घर नं० १८, गिरगांव, कांदेवाडी, मुंबई.

हमारे खुदके छपाये हुए जैन ग्रन्थ।

त्रिलोकसार—स्वर्गीय पं० टोडरमलजीकृत भाषा-वचनिका सहित। इस महान ग्रन्थमें जैनधर्मके अनुसार त्रिलोककी रचनाका खुलासा वर्णन बड़े विस्तारके साथ किया गया है। मूल्य ५॥) रु०

पाण्डवपुराण—न्यायतीर्थ पं० घनश्यामदासजीकृत नया अनुवाद। मू० ५॥) रु०

क्रियाकोष—स्वर्गीय पं० दौलतरामजीकृत। इसमें बतलाया है कि खान-पान कैसा होना चाहिए, भले या बुरे खान-पानका मनपर क्या प्रभाव पडता है; आदि। मू० २॥) रु०

रत्नकरंडश्रावकाचार—स्व० पं० सदासुखजीकृत भाषाटीकासहित। श्रावकाचार-संबंधी बहुत बड़ा ग्रंथ है। मू० ६) रु०

पुण्यास्रव—इसमे धार्मिक भावोंसे परिपूर्ण ५६ छोटी मोटी मनोरंजक कथायें हैं। पृष्ठ संख्या ३४० के लगभग है। मूल्य ४) रु०

भक्तामर कथा—(मन्त्र-यन्त्र-सहित) इसमे मन्त्र, ऋद्धि और उनकी साधनाविधि तथा अड़तालीस यन्त्र भी दिये गये हैं। मू० १।) रु० कपड़ेकी जिल्दका १॥।)

चन्द्रप्रभचरित—इसमें आठवें तीर्थंकर श्रीचंद्रप्रभ भगवानका पवित्र चरित है। मूल्य कपड़ेकी जिल्दका १॥।) सादी जिल्दका १।) रु०

नागकुमारचरित—षट्भाषाकविचक्रवर्ति मल्लिषेण सूरीके संस्कृत ग्रंथका अनुवाद। यह अब नहीं रहा।

ॐनमः सिद्धेभ्यः।

यति श्रीस्वरूपचन्द्रजी विरचित

चौसठ ऋद्धि पूजा

(बृहत्‌गुर्वावली पूजा)

दोहा।

सारासार विचार कर, तज संसृतिको भार।
धारा धर निज ध्यानकी, भए सिंधु भव पार ॥ १ ॥
भूत भविष्यत कालके, वर्तमान ऋषिराज।
तिनके पदको नमन कर, पूज रचूं शिव काज ॥ २ ॥

स्तुति ।

मदअवलिप्तकपोल छंद ।

यह संसार असार दुःखमय जान निरंतर,
विषय-भोग धन धान्य त्याग सब भये दिगंबर ।
परपरणति परिहार लगे निजपरणति मांहीं,
राग दोष मद मोह तणी त्यागी परछांहीं ॥ ३ ॥
जन्म जरा अरु मरण त्रिदोष जु या जग मांहीं,
सब जगवासी जीव भ्रमत कछु साता नांहीं ।
इम विचार चितमांहिं धार संयम अविकारी,
शुक्ल ध्यान धर धीर वरी अविचल शिवनारी ॥ ४ ॥
षट्कायनि के जीवतणी करुणा प्रतिपाले,
कर चोरी परिहार मृषा वच सबही टाले ।

ब्रह्मचर्य व्रत धर्यो परिग्रह द्विविध तज्यो जिन,
पंच महाव्रत येह धार मुनि भये विचक्षन ॥ ५ ॥
चार हाथ भू निरख चलै हित मित वच भाखै,
षट्चालीस जु दोषरहित हो अशन जु चाखै।
भूमि शुद्ध प्रतिलेख वस्तु क्षेपै रु उठावै,
भू निर्जंतु मझांरि मूत्र मल क्षपण करावै ॥ ६ ॥
स्पर्शनके हैं आठ पंच रस रसनाके रे,
घ्राणेंद्रियके दोय चक्षुके पांच गिने रे।
कर्णेंद्रियके सप्त, वीस अरु सात विषय सब,
इष्ट अनिष्ट जु मांहिं करै नहिं राग द्वेष कब ॥ ७ ॥
सामायिक अरु वंदन स्तुति प्रतिक्रमण भजे हैं
प्रत्याख्यान व्युत्सर्ग दिवस तिरकाल सजे हैं।

भूमिशयन अरु स्नानत्याग, नग्नत्व धरै हैं,
कच लोंचें, दिन मांहिं एक वर अशन करै हैं ॥ ८ ॥
खडे होयकर हार करैं सब दोष टाल मित,
दंत-धवन तिन त्यज्यो देह जिय भिन्न लख्यो नित।
अष्टाविंशति ये जु मूलगुण धरत निरंतर,
उत्तर गुण लख च्यार असी धर बाह्य अभ्यंतर ॥ ९ ॥

दोहा।

इत्यादिक बहु गुण सहित, अनागार ऋषिराज।
नमूं नमूं तिन पद कमल, तारण तरण जिहाज ॥ १० ॥

इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अथ समुच्चयपूजा ।

गीताछन्द ।

संसार सकल असार जामें सारता कुछ है नहीं,
धन, धाम, धरणी और गृहिणी त्याग, लीनी वन मही ।
ऐसे दिगंबर हो गये, अरु होंयगे, वरतत सदा ।
इत थापि पूजूं मन वचन करि देहु मंगल विधि तदा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं भूतभविष्यद्वर्तमानकालसम्बन्धिपंचप्रकारसर्वऋषीश्वरा अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्। आह्वाननं । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । स्थापनं । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्। सन्निधापनं ।

अष्टक ।

चाल रेखता ।

लाय शुभ गंगजल भरिकै, कनक भृंगार भरि करकै ।
जन्म जर मृत्युके हरनन, जजूं मुनिराजके चरणन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं भूतभविष्यद्वर्तमानकालसंबंधिपुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातकपंच-प्रकारसर्वमुनीश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

घसूं काश्मीर संग चंदन, मिलाऊं केलिको नंदन ।
करत भवतापको हरनन, जजूं मुनिराजके चरणन ॥२॥ चंदनं ॥
अखित शुभचंद्रके करसे, धरूं कण थालमें सरसे ।
अखय पद प्राप्तिके करणन, जजूं मुनिराजके चरणन ॥ ३ ॥ अक्षतं ॥
पुहुप ल्यो घ्राणके रंजन, उड़त ता मांहिं मकरंदन ।
मनोभव बाणके मरणन, जजूं मुनिराजके चरणन ॥ ४ ॥ पुष्पं ॥
लेय पक्वान्न बहुविधिके, भरूं शुभ थाल सुवरणके ।
असातावेदनी क्षुरणन, जजूं मुनिराजके चरणन ॥ ५ ॥ नैवेद्यं ॥
जगमगे दीप ले करके, रकाबी स्वर्णमें धरके ।
मोहविध्वंसके करणन, जजूं मुनिराजके चरणन ॥ ६ ॥ दीपं ॥

अगर मलयागिरी चंदन, खेयकरि धूपके गंधन ।
होय कर्माष्टको जरनन, जजूं मुनिराजके चरणन ॥ ७ ॥ धूपं ॥
श्रीफलाम्रादि फल ल्याऊं, स्वर्णको थाल भरवाऊं ।
होय शुभ मुक्तिको मिलनन, जजूं मुनिराजके चरणन ॥८॥ फलं ॥
जलादिक द्रव्य मिलवाए, विविध बादित्र बजवाए ।
अधिक उत्साह कर तनमें, चढाऊं अर्घ चरणनमें ॥ ९ ॥ अर्घं ॥

जयमाला ।

सोरठा ।

तारण तरण जिहाज, भवसमुद्रके मांहिं जे ।
ऐसे श्रीऋषिराज, सुमरि सुमरि विनती करूं ॥ १ ॥

पद्धडि छंद ।

जय जय जय श्रीमुनि युगल पाय, मैं प्रणमूं मन वच शीश नाय ॥
जे सब असार संसार जान, सब त्याग कियो आतम कल्यान॥२॥

क्षेत्र वास्तु अरु रत्न स्वर्ण, धन धान्य द्विपद अरु चतुकचरण ।
अरु कौप्य भांड दश बाह्य भेद, परिग्रह त्यागे नहिं रंच खेद ॥३॥
मिथ्यात्व तज्यो संसार मूल, पुनि हास्य अरति रति शोक शूल ।
भय सप्त जुगुप्सा स्त्रीय वेद, फिर पुरुष वेद अरु क्लीव वेद ॥ ४ ॥
क्रोध मान माया रु लोभ, ये अंतरंगमें करत क्षोभ ।
इम ग्रंथ सबै चौबीस येह, तज भए दिगंबर नग्न जेह ॥ ५ ॥
गुण मूल धार तज राग दोष, तप द्वादश धर तन करत शोष ।
तृण कांचन महल मसान मित्त, अरु शत्रुनिमें समभाव चित्त ॥६॥
अरु मणि पाषाण समान जास, पर परणतिमें नहिं रंच वास ।
वह जीव देह लख भिन्न भिन्न, जे निज-स्वरूपमें भाव किन्न ॥ ७॥
ग्रीषम ऋतु पर्वत शिखर वास, वर्षामें तरुतल है निवास ।
जे शीतकालमें करत ध्यान, तटिनी तट चोहट शुद्ध थान ॥ ८ ॥

हो करुणासागर गुण अगार, मुझ देहि अखय सुखको भंडार।
मैं शरण गही मुझ तार तार, मो निजस्वरूप द्यो बार बार ॥ ९ ॥

घत्ता।

यह मुनिगुणमाला परम रसाला जो भविजन कंठे धर ही।
सब विघ्न विनाशै मंगल भासै मुक्ति रमावै वह नर ही ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं भूतभविष्यद्वर्त्तमानकालसंबंधिपुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातकसर्वप्रकारमुनीश्वरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा।

सर्व मुनिनकी पूज यह, करैं भव्य चित लाय।
ऋद्धि सर्व घरमें बसै, विघ्न सबैं नश जाय ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः।

चतुर्विंशतितीर्थंकरसंबंधिगणधरमुनिवरपूजा ।

लक्ष्मी छन्द ।

वृषभसेनादि अस्सी चउ गणधरा, वृषभके चउआसि सहस्र मुनिवरा ।
नीर गंधाक्षतं पुष्प चरु दीपकं, धूप फल अर्घ ले हम जजें महर्षिकं १

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथस्य वृषभसेनादिचतुरशीतिगणधरचतुरशीतिसहस्र-मुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिंहसेनादि सर्व नवति गणधार हैं, अजित जिनराजके लक्ष अनगार हैं। नीर गंधाक्षतं० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं अजितजिनस्य सिंहसेनादिनवतिगणधरैकलक्षसर्वमुनिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

गणी चारुषेणादि शत एक अरु पांच हैं, लक्ष सब दोय संभवतणे सांच हैं। नीर गंधाक्षतं० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं संभवजिनस्य चारुषेणादिपंचोत्तरैकशतगणधरलक्षद्वयसर्वमुनिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

एकसौ तीन वज्रादि हैं गणधरा, सर्व अभिनंदनके तीन लक्ष मुनिवरा। नीर गंधाक्षतं० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनेंद्रस्य वज्रादित्र्युत्तरैकशतगणधरलक्षत्रयमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चमरादिका एकशत षोड़शा गणधरा, सुमतियति चौगुणा सहस अस्सीपरा । नीर गंधाक्षतं०॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं सुमतिजिनेंद्रस्य चमरादिषोडशोत्तरैकशतगणधरविंशतिसहस्रोत्तर-लक्षत्रयसर्वमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वज्रादि शत एक दश पद्मके गणधरा, तीन लख तीस हज्जार सब मुनिवरा। नीर गंधाक्षतं० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनेंद्रस्य दशोत्तरैकशतगणधरत्रिंशत्सहस्रोत्तरलक्षत्रयसर्व-मुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चमरबल आदि पिच्याणवै गणधरा, सुपार्श्वके तीन लख सर्व योगीश्वरा। नीर गंधाक्षतं० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनेंद्रस्य चमरबलादिपंचोत्तरनवतिगणधरलक्षत्रयसर्वमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नवति अरु तीन दंतादि गणराज हैं, चंद्रजिनके मुनी सार्द्ध द्वय लाख हैं। नीर गंधाक्षतं० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभाजिनस्य त्र्युत्तरनवतिगणधरसार्द्धद्वयलक्षसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विदर्भादि गणराज अस्सी रु शुभ आठ हैं, पुष्पदंत जिनतणे तीन लाख साधु हैं। नीर गंधाक्षतं० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंताजिनस्य विदर्भाद्यशीतिगणधरलक्षत्रयसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

एक अस्सी गणधरा आदि अनगार हैं, एक लक्ष शीतलके और मुनिराज हैं। नीर गंधाक्षतं० ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं शीतलनाथजिनस्यानगाराद्येकाशीतिगणधरैकलक्षसर्वमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथादि गणराज सत्तर अरु सात हैं, चउअसि सहस्र श्रेयांसके साथ हैं। नीर गंधाक्षतं० ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनस्य कुंथादिसप्तसप्ततिगणधरचतुरशीतिसहस्रसर्वमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुधर्मादि षट्षष्ठी वासुपूज्य गणधर सबै, सहस बहत्तरे अवर मुनीश्वर सब फबै। नीर गंधाक्षतं० ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनस्य सुधर्मादिषट्षष्ठिगणधरद्वासप्ततिसहस्रसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गणी नंदरार्यादि पंच पच्चास हैं, विमल-मुनि सर्व अडसठि हज्जार हैं।
नीर गंधाक्षतं० ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथजिनस्य नंदरार्यादिपंचपंचाशद्गणधराष्टषष्ठिसहस्रसर्व-मुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

गणधर जय आदि पंचास जिननंतके, अवर मुनि षष्ठिषट् सहस्र स-व भंतके। नीर गंधाक्षतं० ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं अनंतनाथजिनस्य जयादिपंचाशद्गणधरषट्षष्ठिसहस्रसर्वमुनिवरे-भ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अरिष्टादि चालीस त्रय सर्व गणधार हैं,धर्म जिनके यती चउसठ हज्जार हैं। नीर गंधाक्षतं० ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं धर्मनाथजिनस्यारिष्टादित्रिचत्वारिंशद्गणधरचतुःषष्ठिसहस्रसर्वमुनिभ्वरे-भ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठित्रय गणधार चक्रायुधादी महा, शांति जिनवर सहस बासठ लहा। नीर गंधाक्षतं० ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथजिनस्य चक्रायुधादित्रिषष्ठिगणधरद्वाषष्ठिसहस्रसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभ्वादि गणराज पैंतीस जिन कुंथके, साठ हज्जार मुनिराज सब संघके। नीर गंधाक्षतं० ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं कुंथुनाथजिनेंद्रस्य स्वयंभ्वादिपंचत्रिंशद्गणधरषाष्ठिसहस्रमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तीस गणधार कुंथ्वादि अरनाथके, सहस्र पंचास मुनिराज सब साथके। नीर गंधाक्षतं० ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं अरनाथजिनस्य कुंथ्वादित्रिंशद्गणधरपञ्चाशत्सहस्रसर्वमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विशाखादि गणराज सब बीस अरु आठ हैं, मल्लिजिनके मुनी सहस चालीस हैं। नीर गंधाक्षतं० ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं मल्लिनाथजिनस्य विशाखाद्यष्टाविंशतिगणधरचत्वारिंशत्सहस्रसर्वमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टदश गणधरा मल्लि आदिक सदा, मुनिसुव्रत तीस हज्जार मुनिवर तदा । नीर गंधाक्षतं० ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनस्य मल्ल्याद्यष्टादशगणधरत्रिंशत्सहस्रमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोमादि गणधार दशसप्त नमिनाथके, बीस हज्जार सब अवर मुनि साथके । नीर गंधाक्षतं० ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं नमिनाथजिनस्य सोमादिसप्तदशगणधरविंशतिसहस्रसर्वमुनिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

आदि वरदत्त गणधार एकादशा, नेमिके अवर मुनि सहस अष्टादशा। नीर गंधाक्षतं० ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेंद्रस्य वरदत्ताद्येकादशगणधराष्टादशसहस्रमुनिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभ्वादि गणधार दश अवर सब मुनिवरा, पार्श्व जिनराजके सहस षोड़श परा। नीर गंधाक्षतं० ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं पार्श्वजिनेंद्रस्य स्वयंभ्वादिदशगणधरषोडशसहस्रमुनिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गौतमादिक सबै एकदश गणधरा, वीरजिनके मुनि सहस चौदस वरा। नीर गंधाक्षतं० ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं महावीरजिनस्य गौतमाद्येकादशगणधरचतुर्दशसहस्रमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पय छंद।

तीर्थंकर चौवीस सबनके गणधर सारे।

चौदासै पच्चास और त्रय सर्व निहारे ।
अवर मुनीश्वर सर्व संघके सप्त प्रकार जु ।
लख उनतीस रु अधिक अष्टचालीस हजार जु ।
इम तीर्थेश्वर सकलके, सर्व मुनीश मिलाय ।
अष्ट द्रव्य कण-थाल भरि पूजूं शीस नवाय ॥२५॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां एकसहस्रपंचाशत्त्रयाधिकचतुःशतसहस्रगणधरसप्तप्रकारीय एकोनत्रिंशल्लक्षाष्टचत्वारिंशत्सहस्रसमस्तमुनिवरेभ्यो जलाद्यर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंडलप्रथमकोष्ठस्थबुद्धिऋद्धिधारक मुनिपूजा ।

स्थापना ।

लक्ष्मीधरा छंद ।

बुद्धिऋद्धीश्वरा बुद्धिऋद्धीश्वरा, अत्र आगच्छ आगच्छ तिष्ठो वरा ।

मम निकट हो निकट हो निकट हो सर्वदा, तुम पूजिहूं पूजिहूं जोर कर सर्वदा ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशबुद्धिऋद्धिधारकसर्वऋषीश्वरा अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् । आह्वाननं । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । स्थापनं । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत सन्निधापनं ।

अष्टक ।

चाल द्यानतरायकृत अठाई पूजनकी ।

प्रासुक जल शुभ लेय, कंचन भृंग भरूं ।
त्रय धार चरण ढिग देय, कर्म-कलंक हरूं ।
मैं बुद्धि ऋद्धि धर धीर, मुनिवर पूज करूं ।
यातें हो ज्ञान गहीर, भव-संताप हरूं ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशबुद्धिऋद्धिधरसर्वऋषीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिरि चंदन लेय, कुंकुम संघ घसूं ।

अर्चा कर श्री ऋषिराज, भव-आताप नसूं ॥
मैं बुद्धिऋद्धि० ॥ चंदनं ॥
अखित अखंडित सार, मुनि-चित से उजरे।
ले चंद्रकिरण उनहार, चरणानि पुंज धरे ॥
मैं बुद्धिऋद्धि०॥ अक्षतान् ॥
सुमन सुमन मनहार, अधिक सुगंध भरे ।
मन्मथके नाशनकार, ऋषिवर पाद धरे ॥
मैं बुद्धिऋद्धि०॥ पुष्पं ॥
नेवज विविध मनोज्ञ, मोदक थाल भरे ।
ऋषिवर चरण चढाय, रोग क्षुधादि हरे ॥
मैं बुद्धिऋद्धि०॥ नैवेद्यं ॥
ध्वांत हरण शुभ ज्योति, दीपककी भारी ।

ले ज्ञान उद्योतन कार, [illegible]णमय भर थारी ॥
मैं बुद्धिऋद्धि० ॥ दी[illegible]
या धूप दशांग बनाय [illegible]आशनमें जारी ।
भर स्वर्ण धुपायन मांहिं जरत सब कर्मारी ।
मैं बुद्धिऋद्धि० ॥ धूपं ॥
श्रीफल पूग विदाम, खारिक मनहारी ।
मैं मुक्ति मिलनके काज, चढाहों भरि थारी ॥
मैं बुद्धिऋद्धि० ॥ फलं ॥
सब द्रव्य अष्ट भरि थार, बहुविध तूर बजे ।
करि गीत नृत्य उत्साह, हर्षित अर्घ सजे ॥
श्रीऋषिवर चरण चढाय फल यह मांगत हूं ।
मो बुद्धिऋद्धि दो सार करजुग याचत हूं ॥
ॐ ह्रीं अष्टादशबुद्धिऋद्धिधारकसर्वऋषीश्वरभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्येक पूजा ।

दोहा ।

अष्टादश बुधिऋद्धिके, धारक जे ऋषिराज ।
तिन्हें अर्घ प्रत्येक कर, यजूं बुद्धिके काज ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशबुद्धिऋद्धिधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चाल छप्पा ।

सकल द्रव्य पर्याय गुणानि कारि समय एक लखवाई ।
लोक अलोक चराचर जामें हस्तरेख समझाई ॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, केवल बुधिऋधि धार-
मुनीश्वर पूजो हो भाई ॥

ॐ ह्रीं केवलबुद्धिऋद्धिधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ढाइ द्वीपके सब जीवनकी मनकी बात लखाई ।
युगपत् एक कालमें जानें मनपर्यय ऋधि पाई ॥

मुनीश्वर पूजो हो भाई, मनपर्यय ऋधि धार-
मुनीश्वर पूजो हो भाई ॥
ॐ ह्रीं मनःपर्ययबुद्धिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अविभागी पुद्गल परमाणू सो प्रत्यक्ष लखाई ।
अवधि बुद्धि ऋधि धार मुनीश्वर चरण-कमल सिरनाई ॥
मुनीश्वर पूजो अर्घ चढाई; अवधि बुद्धि ऋधि धार-
मुनीश्वर पूजो हो भाई ॥
ॐ ह्रीं अवधिबुद्धिऋद्धिधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कोष्ठ मांहिं जो वस्तु भरी है मन वांछित कढवाई ।
प्रश्न करत ही शब्द-अर्थमय शास्त्र सर्व रचवाई ॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, कोष्ठबुद्धि ऋधि धार—
मुनीश्वर पूजो हो भाई ॥

चौ. १२

ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धिधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

बीज बोय जो भूमि मांहिं कृषि बहुत धान्य निपजाई ।
बीज एक ही धारि चित्त ऋषि सर्व ग्रंथ सुनवाई ॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, बीज बुद्धि ऋधि धार—
मुनीश्वर पूजो हो भाई ॥

ॐ ह्रीं बीजबुद्धिधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चक्रवर्त्तिकी सब सेनाके जीव अजीव रु तांई ।
युगपत् शब्द सुणै जो श्रवणन सब धारण हो जाई ॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, संभिन्नश्रोत्र ऋधि धार—
ऋषीश्वर पूजो हो ! भाई ॥

ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोत्रर्द्धिधारकमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व ग्रंथको एक पाद लखि दे सब ग्रंथ सुनाई ।
पादानुसारिणी ऋद्धि यही है याहि धरें मुनिराई ॥

मुनीश्वर पूजो हो भाई, पादानुसारिणी ऋधि धार—
मुनीश्वर पूजो हो! भाई ॥
ॐ ह्रीं पादानुसारिणीऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नव योजनतें बहुत अधिकको स्पर्शन बल अधिकाई ।
दूरस्पर्श ऋधि धार ऋषीश्वर चरणां चित लवलाई ॥
मुनीश्वर पूजो हो! भाई, दूरस्पर्श ऋधि धार—
ऋषीश्वर पूजो हो भाई ॥
ॐ ह्रीं दूरस्पर्शनर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नव योजनतें अधिक स्वाद बल रसनेंद्रियमें थाई ।
दूरास्वादन ऋधि धार ऋषि चरणां सीस नमाई ॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, दूरास्वाद ऋधि धार—
मुनीश्वर पूजो हो भाई ॥
ॐ ह्रीं दूरास्वादनर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नव योजनतैं बहुत आधिकको गंध नासिका जाई।
दूरगंध ऋधि धार मुनीश्वर चरणां शसि नमाई ॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, दूरगंध ऋधि धार-
मुनीश्वर पूजो हो ! भाई ॥

ॐ ह्रीं दूरगंधऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस सताल ऋद्धि (द्धि) सत त्रैसठि योजनतें आधिकाई।
चक्षूंद्रिय बल आधिक अनूपम दूरदृष्टि ऋधि पाई ॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई ! दूरावलोक ऋधि धार-
मुनीश्वर पूजो हो ! भाई ॥

ॐ ह्रीं दूरावलोकनर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नव योजनतें बहुत आधिकको शब्द श्रवण थल थाई।
दूरश्रवण ऋधि धारक मुनिके चरण-कमल सिरनाई ॥

१ किसी पुस्तकमें " बारह योजन " ऐसा भी पाठ है।

मुनीश्वर पूजो हो ! भाई, दूरश्रवण ऋधि धार—
ऋषीश्वर पूजो हो भाई॥

ॐ ह्रीं दूरश्रवणर्द्धिधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्व हो सिद्ध तहां तब महाविद्या सब आई।
आज्ञा मांगै कार्य करणकी मुनि तिनको नहिं चाई॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, दश पूरव ऋधि धार—
मुनीश्वर पूजो हो ! भाई॥

ॐ ह्रीं दशपूर्वऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरव धारण होवैं तप प्रभाव मुनिराई।
चौदह पूरव धारण समरथ तिन मन वच सिरनाई॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, चौदह पूरव धार मुनीश्वर पूजो हो भाई॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरीक्ष अरु भौम अंग स्वर व्यंजन लक्षण तांई।

छिन्न स्वप्न अष्टांग-निमित लखि होनहार बतलाई ॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, अष्टांग-निमित ऋधि धार-
ऋषीश्वर पूजो हो भाई ॥
ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्तबुद्धिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
बिना पढ़े ही जीवादिकके सकल भेद समझाई ।
चौदह पूरव ज्ञान धार सम भेद देय समझाई ॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, प्रज्ञाश्रवण ऋधि धार-
मुनीश्वर पूजो हो! भाई ॥
ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रवणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
पर पदार्थतें आप भिन्न है जीव यहै लखवाई ।
यातें दिगंबर दृढ़ मुद्रा धरि परकी चाह मिटाई ।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, प्रत्येकबुद्धिऋधि धार-
मुनीश्वर पूजो हो! भाई ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

परवादी जब वाद करनको ऋषिवर सन्मुख आई ।
स्यादवाद करि तिन वच खंडन विजय-ध्वजा फहराई ॥
मुनीश्वर पूजो हो भाई, वादित्वऋद्धि धर सर्व-
मुनीश्वर पूजो हो ! भाई ॥

ॐ ह्रीं वादित्वऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल ।

केवल ऋधितें आदि लेय बुधि ऋद्धि अष्टदश,
धारक तिनके नग्न दिगंबर साधु सर्व दिश ।
समुचय अर्घ चढ़ाय पूज हूं सर्वदा,
सर्व विघानिको नाश बुद्धि द्यो शर्मदा ॥

ॐ ह्रीं केवलबुद्ध्यृद्ध्यादिवादित्वर्द्धिपर्यंताष्टादशबुद्धिऋद्धिधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१ कल्याण देनेवाली ।

जयमाला ।

दोहा ।

सर्व संघ मंगल करन, बुद्धिऋद्धि धर धीर ।
मुनी तास थुति करत ही, बुद्धि शुद्ध हो वीर ॥

वेसरी छंद ।

प्रथम अंग आचार जु जानो, मुनि आचरण तासतें मानो ।
सहस अठारा लख पद याके, परकूं त्यागि आप रंग राचे ॥
सूत्रकृतांग अंग है दूजो, सूत्र अर्थ सामान्य जु दूजो ।
पद छत्तिस हजार जु याके, पढ़ें मुनी सब अविचल याके ॥
स्थान अंग तीजो है यामें, सब स्थाननकी संख्या जामें ।
सहस बयाल पदनमें ये हैं, पढ़ें मुनी तिन नमन करें हैं ॥
समवाय अंग चौथो है यामें, सदृश पदारथ वरण्या जामें ।
पद इक लख चउसठि हज्जारं, पढ़ें मुनी उतरें भव पारं ॥

पंचम अंग व्याख्याप्रज्ञप्ती, जामें सप्तभंग विज्ञप्ती ।
गणधर प्रश्न किये जो वरणन, पद लख दो अठवीस सहस्रन ॥
ज्ञातृकथा अँग षष्ठम जानो, त्रिषष्टि पुरुषको धर्म कथानो ।
पांच लाख अरु छपन हजारं, पद सब पढ़ें मुनीश्वर सारं ॥
सप्तम अंग उपासकध्ययनं, श्रावक धर्म तणों सब अयनं ।
पद ग्यारह लख सतर हजारं, सो सब पढ़ें मुनी अविकारं ॥
अष्टम अंग अंतकृत दश है, तामें अंतकृत केवल जस है ।
तेविस लख अठवीस हजारं, पाद पढ़ें मुनिवर भवतारं ॥
सह उपसर्ग अनुत्तर जननं, अनुतरपाददशांगं नवमं ।
बाण वलख चवचाल हजारं, पाद पढ़ें मुनिवर सुखकारं ॥
दशम अंग प्रश्नव्याकरणं, होणहार सब सुख दुख निरणं ।
लाख तरेणव सोल हजारं, पाद पढ़ें मुनिवर जगतारं ।

विपाकसूत्र एकादश अंगं, कर्मविपाक रसादिक भंगं ।
पद इक कोड़ चौरासी लक्षं, ताकूं पढ़ि मुनि भये विचक्षं ॥
अंग द्वादशम दृष्टीवादं, पंच भेद ताके सब पादं ।
शत अठ कोड़ि रु अडसठ लक्षं, छपन हजार पांच सब दक्षं ॥
प्रथम भेद परिकर्म ज़ु नामं, पंच प्रज्ञप्ति ग्रंथ अभिरामं ।
चंद्र सूर्य जँबुद्वीप सुव्यक्ती, द्वीपसमुद्र व्याख्याप्रज्ञप्ती ॥
इनके पद इक कोड़ इक्यासी, लाख हजार पांच है खासी ।
तिनमें सब इनको है रूपा, ये सब पढ़ें मुनीश्वर भूपा ॥
दूजो भेद सूत्र मरजादी, त्रिशत त्रेसठ भेद कुवादी ।
लाख तरेसठि पद हैं याके, पढ़े ताहि वंदूं पद जाके ॥
प्रथमानुयोग तीजो वर भेदं, त्रिसठ शलाका पुरुष निवेदं ।
पांच सहस्र पद याके जानें, पाप पुण्य फल सर्व पिछाने ॥

चौथो भेद पूर्वगत जामें, पूरव चौदह गर्भित तामें ।
कोडि पच्याणव लक्ष पचासं, अधिक पांच पद जाणो तासं ॥
श्रुत संपति सब इनके मांहीं, धारण कर सब श्रुत अवगाही ।
जो मुनीश सब पूरव धारी, तिनकी महिमा अगम अपारी ॥
पंच भेद चूलीका जासा, जल थल माया रूप अकासा ।
पद दशकोड़ि रु लख उणचासा, षट् चालीस सहस सब तासा ॥
इकसौ बारा कोडि पचावन, लाख तियासी सहस अठावन ।
पांच अधिक सब पद अंगानिके, मुनिवर पढ़ें नमूं पद तिनके ॥
इकावन कोडि रु लाख आठ तिन,सहस चौरासी षट्शत परिमित।
साढा इकविस श्लोक अनुष्टं, एक जु पद कहिये स्पष्टं ॥
द्वादशांगमय रचना सारी, बुद्धि ऋद्धिमें गर्भित भारी ।
तप प्रभाव ऐसी ऋधिधारी, तिन पद ढोक त्रिकाल हमारी ॥

घत्ता।

यह जयमाला परम रसाला बुद्धिऋद्धि धर गुणमाला।
मुनि-गुणमाला हरि जंजाला बुद्धि विशाला करि माला॥

ॐ ह्रीं शुद्धबुद्धिऋद्धिदायकसर्वऋषीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा।

बुद्धिऋद्धि धर मुनि तणी, पूज करै जु सदीव।
बुद्धि प्रचुर ताके हृदय, प्रकटित होय अतीव॥

इत्याशीर्वादः।

द्वितीयकोष्ठे चारणर्द्धिधारकमुनिवर पूजा।

स्थापना।

अडिल्ल।

क्रिया चारणी ऋद्धि भेद नव हैं सही।

तिनके धारक सर्व मुनीश्वर जे सही ।
आह्वानन, स्थापन, मम संनिहित करूं ।
मन, वच, तन करि शुद्ध भाव त्रय उच्चरूं ॥

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वऋषीश्वरसमूह अत्रावतरावतर संवौषट् । आह्वाननं।
ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वऋषीश्वरसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनं ।
ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वऋषीश्वरसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधापनं ।

अष्टक ।

चाल–गोक्षेळणी तथा मांग ।

रतन जडित भृंग भर गंग-जल लायो (जी)
जन्म मरण मेटवेकूं भावसों चढायो ।
चारणऋद्धिके धारी मुनीश्वर पूज करूं जी ॥

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्युरोगविनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंद-गंधको घसाय कुंकुमा मिलाई (जी)
भवातापके नशावनको चरण चढाई ।
चारणऋद्धिके धारी मुनीश्वर पूज करूं जी ॥

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्द्र-किरणके समान श्वेत तंदुलौघ (जी)
मुनींद्र अग्र पुंज करे हो सुख बोध ।
चारणऋद्धिके धारी मुनीश्वर पूज करूं जी ॥

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प गंधतें मनोज्ञ घ्राण चक्षु हारी (जी)
मुनींद्र-चंद्र-चरण पूजे होय मदन छारी ।
चारणऋद्धिके धारी मुनीश्वर पूज करूं जी ॥

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घेवरा सुफेणिका मोदकादि चंद्रिका (जी)
रोग क्षुधा नष्ट होय चहोड़ पद मुनींद्रका ।
चारणऋद्धिके धारी मुनीश्वर पूज करूं जी ॥

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपको उद्योत होत ध्वांत होय ना कदा (जी)
मुनींद्र-चंद्र-ज्योति किये मोह-ध्वांत हो विदा ।
चारणऋद्धिके धारी मुनीश्वर पूज करूं जी ॥

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर तगर चंद-चूर गंधतें मिलाया (जी)
अग्नि संग खेय धूप कर्म सब जराया ।
चारणऋद्धिके धारी मुनीश्वर पूज करूं जी ॥

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुष्ठु मिष्ट श्रीफलादि हिरण्य थालमें भरूं (जी)
श्रीमुनींद्र-चरण चढ़ाडि मुक्ति अंगना बरूं।
चारणऋद्धिके धारी मुनीश्वर पूज करूं जी॥
ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादि द्रव्य लेय हेम थालमें भरें (जी)
मुनींद्र-चंद्र चढ़ाडि सर्व ऐबको हरें।
चारणऋद्धिके धारी मुनीश्वर पूज करूं जी॥
ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक पूजा।

सोरठा।

क्रियाचरण नव भेद, ऋद्धि धार जे हैं मुनी।
जुदे जुदे निरखेद, पूजूं अर्घ चढायके॥
ॐ ह्रीं नवभेदचारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद ।

जल ऊपर थलवत् चालै, जल-जंतु एक नहिं हालै ।
जलचारण मुनिवर वे हैं, तिन पद पूजे शिव ले हैं ॥

ॐ ह्रीं जलचारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

धरतीसे अंगुल च्यारै, ऊंचो तिनको सुविहारै ।
क्षणमें बहु योजन जैहैं, जंघाचारण पूजें हैं ॥

ॐ ह्रीं जंघाचारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मकडी-तंतूपर चालै, सो तंतु टूटै नहिं हालै ।
ते तंतूचारण ऋधिधर, तिन पूजेतें हो शिव-वर ॥

ॐ ह्रीं तंतूचारण.क्रियाऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पनिपर गमन कराई, पुष्प-जीवसुं बाधा नांहीं ।
मुनि चारण-पुष्प वही है, तिन पूजे मुक्ति लही है ॥

ॐ ह्रीं पुष्पचारणर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पत्रनिपर गमन करंता, पत्र-जीव बाध नहिं रंचा।
यह पत्रचारण मुनि पूजें, तिनतें सब पातक धूजें॥
ॐ ह्रीं पत्रचारणर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजनिपर मुनि विचराई, बीज-जीवसु बाधा नांहीं।
जे चारण-बीज ऋषीश्वर, तिन पूजें हैं अवनीश्वर[1]॥
ॐ ह्रीं बीजचारणर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेणीवत् गमन करंता, सब जीवजाति रक्षंता।
श्रेणीचारण ते कहिए, पूजे मनवांछित पइये॥
ॐ ह्रीं श्रेणीचारणर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे अग्नि-शिखापर चाले, सो अग्नि शिखा नांहिं हाले।
ते अग्निचारण मुनि पूजें, तिनको शिव-मारग सूझे॥
ॐ ह्रीं अग्निचारणर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ राजा।

पालै आज्ञा जिनशासन, कायोत्सर्गादिक आसन—
धरि, गमन करें नभ माँहीं, नभचारण पूज कराई ॥
ॐ ह्रीं नभश्चारणर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा।

जलचारणतें आदि, भेद क्रियाऋधिके सकल।
धारक तिन ऋषिपाद, मन वच तन पूजूं सदा ॥
ॐ ह्रीं नवभेदक्रियाचारणर्द्धिप्राप्तमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला।

अडिल्ल।

चारण ऋधिके धार मुनीश भए तिन्हें।
मन, वच, तन करि शुद्ध नमन करिहूं जिन्हें ॥
जीव भेद षट् काय अभय सबको दियो।
तिनके तनमें बिना यतन ही सिध भयो ॥ १ ॥

चाल—पाणीहारी।

पृथ्वी अरु अप् तेंजकी सब जाणी हो,
वायु कायकी जाति मुनिवरजी।
नित्य रु इतर निगोदकी सब जाणी हो,
सात सात लख जाति मुनिवरजी ॥ २ ॥
वनस्पतीकी लाख दस सब जाणी हो,
विकलत्रय दो दो लाख मुनिवरजी।
पंचेंद्रिय तिर्यंचकी सब जाणी हो,
देव नरक चव चव लाख मुनिवरजी ॥ ३ ॥
चौदह लाख मनुष्यकी सब जाणी हो,
ये योनि चौरासी लाख मुनिवरजी।
इकसौ साठ निन्याणवै सब जाणी हो,

लाख कोडि कुल भाख मुनिवरजी ॥ ४ ॥
इंद्रिय पंच जु च्यार गति सब जाणी हो,
षट् काय पंद्रह योग मुनिवरजी ।
वेद तीन द्रव्य भावतें सब जाणी हो,
कषाय पचीसको थोक मुनिवरजी ॥ ५ ॥
ज्ञान आठमें भेद दो वह जाणी हो,
सम्यक् अरु कुज्ञान मुनिवरजी ।
संयम सात रु दर्श चव सब जाण्या हो,
लेश्या षट् पाहिचान मुनिवरजी ॥ ६ ॥
भव्य दोय सम्यत्तव छह जाणी हो,
संज्ञी उभय बखान ।
अहारक युग सब जीवके सो जाण्या हो,

मार्गण चौदह जान मुनिवरजी ॥ ७ ॥
गुणस्थान चउ दस सकल सब जाण्या हो,
चौदह जीवसमास मुनिवरजी ।
पर्यापत षट् भेद युत सब जाण्या हो,
प्राण जु दश है जास मुनिवरजी ॥ ८ ॥
संज्ञा चार जु जीवकी सब जाण्या हो,
है बारह उपयोग मुनिवरजी ।
बीस प्ररूपणातें सकल श्रीऋषिवरजी,
जाण्यो जीव प्रयोग मुनिवरजी ॥ ९ ॥
इनतें जहँ तहँ जीव हैं श्रीमुनिवरजी,
त्रस थावर दो भांति जाण्या हो ।
सूक्षम वादर भेद युत सब जाणी हो,

संसारीकी जाति मुनिवरजी ॥ १० ॥
सर्व जानि आगम गमन सब करतबजी,
संवर धर निज भाव मुनिवरजी ।
पालै करुणा सबनकी श्रीमुनिवरजी,
जीव-जाति करि चाव मुनिवरजी ॥ ११ ॥
चारण ऋधिके होत ही करुणा प्रतिपाल,
पृथ्वी धरत न पांव मुनिवरजी ।
तातें जिनकी देहके श्रीमुनिवरके,
रंच न हिंसाभाव मुनिवरजी ॥ १२ ॥
चारण ऋधिके गुणनिको धी तुछ धारी हो,
कोलौं करै कहान मुनिवरजी ।
सहस जीभतें इंद्रजी श्रीमुनिवरके,

नहिं कर सकै बखान मुनिवरजी ॥ १३ ॥
अब मेरी यह वीनती श्रीमुनिवरजी,
सुन लीज्यो ऋषिराज स्वामीजी ।
जोलों शिव पाऊं नहीं मुनिवरजी,
तोलों दरश दिखाय यतिवरजी ॥ १४ ॥

सोरठा ।

जो यह पढे त्रिकाल, गुणमाला ऋषिराजकी ।
होय भवोदधि पार, मुनिस्वरूपको ध्यान करि ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छप्पय ।

चारण मुनिंकी पूज करै इह विधि भवि प्राणी ।
सकल विघनको नाश होय मंगल सुनिधानी ।

ऋद्धि बुद्धि बहु होय तासके घरके मांहीं।
पुत्र पौत्र सुख बढे और परियण सुखदाई।
मन वचन काय पूजा करत, पाप सकलको नाश फिर।
भरत पुण्य भंडारके, मुनिप्रसादतें तास घर॥

इत्याशीर्वादः।

तृतीयकोष्ठे विक्रियर्द्धिमुनि पूजा।

स्थापना।

चाल चौपाई रूपक।

सब जीवनको सुखके कंदा, विक्रियऋधिके धार मुनिंद।
थापों पूजन काज सदीवा, मन वांछित फल दाय अतीवा॥

ॐ ह्रीं विक्रियर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वर अत्रावतरावतर संवौषट्। आह्वानम्।
ॐ ह्रीं विक्रियर्द्धिप्राप्त सर्व मुनीश्वर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विक्रियर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वर अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधापनम् ।

अष्टक ।

चाल–' आवत नीको काल ' इस रागमें ।

मुनीश्वर पूजत हूं मैं, विक्रियऋधिके धार मुनीश्वर पूजत हूं मैं॥टेर॥
कमल सुगंध सुवासित परिमल गंगादिक जल सार ।
निर्गत रत्नभृंग त्रय धारा जन्म जरा मृति हार ॥
मुनीश्वर पूजत हूं० ॥

ॐ ह्रीं विक्रियर्द्धि प्राप्त सर्व ऋषीश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिरि चंदन घसि केसर और मिला घनसार ।
भव-संताप हरणके कारण अरचूं बारंबार ॥
मुनीश्वर पूजत हूं० ॥ चन्दनं ॥

कमल-शालिके अखित अखंडित मुक्ता सम अविकार ।
अखय अखंडित सुखकारण भरि कनक-रतनमय थार ॥
मुनीश्वर पूजत हूं० ॥ अक्षतान् ॥
अमर-तरू अरु कल्पबेलके पुष्प सुगंध अपार ।
मनमथभंजन कारन अरचूं भरि कणमय शुभ थार ॥
मुनीश्वर पूजत हूं० ॥ पुष्पं ॥
पिंड सुधामय मोदक उज्ज्वल दिव्य सुगंध रसाल ।
स्वर्णथाल भरि चरण चढाये होत क्षुधा निरवार ॥
मुनीश्वर पूजत हूं० ॥ नैवेद्यं ॥
जगमग जगमग ज्योति करत है दीप-शिखा तमहार ।
मोह विध्वंसन ज्ञान उद्योतक आर्त्तिक चरण उतार ॥
मुनीश्वर पूजत हूं० ॥ दीपं ॥

कृष्णागर मलयागिरि चंदन-धूप अग्नि संग जार ।
कर्म-धूम्र उड दस दिसि धावै भ्रमर करत गुंजार ॥
मुनीश्वर पूजत हूं० ॥ धूपं ॥
श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी एला-फल सहकार।
कणमय थाल भराय यजत ही होय मुक्ति-भर्त्तार ॥
मुनीश्वर पूजत हूं० ॥ फलं ॥
जल गंधाक्षत पुष्प जु नेवज दीप धूप फल सार ।
स्वर्णथाल भरि अर्घ चढाऊं करि जय जय जय कार ॥
मुनीश्वर पूजत हूं० ॥ अर्घं ॥

प्रत्येक पूजा ।

दोहा ।

विक्रय ऋधिके एकदस, भेद धार ऋषिराज ।

भिन्न भिन्न तिन अर्घ दे, पूजूं शिव हित काज़ ॥

ॐ ह्रीं विक्रियर्द्धिधारकैकादशभेदसहितसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल होली काफी ।

मुनीश्वर पूजों अर्घ चढाई, जो विक्रियऋधि शुभ पाई ॥ टेर ॥

कमल-तंतु पर जो जा निवसै निराबाध तिष्ठाई ।

अणु समान काया हो जावै यह अणिमाऋधि पाई ॥

मुनीश्वर पूजों अर्घं० ॥

ॐ ह्रीं अणिमाऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चक्रवर्त्ति-संपद निपजावै, योजन लाख उंचाई ।

निज शरीरको क्षणमें करत है यह महिमा ऋधि गाई ॥

मुनीश्वर पूजों अर्घं० ॥

ॐ ह्रीं महिमाऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

काय बडी दीखत सब जनकूं अर्कतूल हलकाई ।
ऐसी ऋधि उपजत मुनिवरको सो लघिमा जु कहाई ॥
मुनीश्वर पूजों अर्घ० ॥

ॐ ह्रीं लघिमाऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शरीर सूक्षम जनकूं दीखै, इन्द्रादिक मिल आई ।
जिनतें हलै चलै नहिं कबहूं यह गरिमाऋधि पाई ॥
मुनीश्वर पूजों अर्घ० ॥

ॐ ह्रीं गरिमाऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी पर तिष्ठैं मुनिवर मेरु-शीस स्पर्शाई।
चन्द्र सूर्य ग्रह अँगुली धारैं प्राप्त ऋद्धि कर भाई ॥
मुनीश्वर पूजों अर्घ० ॥

ॐ ह्रीं विक्रियर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं तपोतिशयसहितसर्वमुनीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलय सुचंदन, कदली नंदन, भव-तप भंजनको लाया ।
तुम चरण चढामी, शिवसुखगामी, गुणधामी पूजन आया ।
तपऋद्धिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यश्चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सालि अखंडित, सौरभ मंडित, चन्द्र-किरणसे अनियारी ।
भूपतिको औसर, हम इह औसर, पुंज करूं शिव-पदकारी ।
तपऋद्धिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

गुंजत बहु भृंग; पुष्पसुगंधं, कल्पवृक्षके शुभ ल्यायो ।
हरि बाण मनोजं, पद अंभोजं, पूजन कारन मैं आयो ।
तपऋद्धिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पर्वत भेद निकस वे जावें छिद्र न हो ता मांहीं ।
रुकें नहीं काहूसे मुनिवर अप्रतिघातऋधि याही ॥
मुनीश्वर पूजों अर्घ० ॥

ॐ ह्रीं अप्रतिघातऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

देखत सबके प्रछन्न होवें काहुके दृष्टि न आई ।
अन्तर्धानऋद्धि है ये ही तपबलमें प्रगटाई ॥
मुनीश्वर पूजों अर्घ० ॥

ॐ ह्रीं अन्तर्धानऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मनवांछित जो रूप बनावें सो होवे मनमांहीं ।
कामरूपिणीऋद्धि यही है तपबल यह उपजाई ॥
मुनीश्वर पूजों अर्घ० ॥

ॐ ह्रीं कामरूपिणीऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा।

तप महात्मतें येहु विक्रियऋधि उपजी जिन्हें।
मन वांछित फल लेहु पूजें ध्यावें सो तिन्हें ॥

ॐ ह्रीं अणिमादिकामरूपिणीपर्यन्तविक्रियर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला।

गीताछन्द।

वज्रधर अरु चक्रधर अरु धरणिधर विद्याधरा।
तिरशूलधर अरु काम-हलधर सीस चरणनि तल धरा ॥
ऐसे ऋषीश्वर ऋद्धि विक्रियधार तिनके पद-कमल।
वंदूं सदा मन वचन तन करि हरो मेरे कर्म-मल ॥

ढाल त्रिभुवनगुरुकी।

संसार अपाराजी, मिथ्यात्व अंधाराजी।

यामें दुख भारा, चतुर्गतिके विषेंजी ॥ २ ॥
नरकनिके मांहींजी, कहूं साता नांहींजी ।
सागरबहु तांई, दुख भुगत्या घणाजी ॥ ३ ॥
तिर्यग गति धारोजी, पशुकाया सारीजी ।
तामें दुख भारी, भूख तृषा तणोजी ॥ ४ ॥
कोई लादे बांधैजी, धरि जूडा कांधेजी ।
वह मारे अरु रांधे, निर्दय नर घणाजी ॥ ५ ॥
मानुष भव मांहींजी, सुख हैं छिन नांहींजी ।
सबकूं दुखदाई, गर्भज वेदनाजी ॥ ६ ॥
बालक वय मांहींजी, कछु ज्ञानहु नांहींजी ।
पाई फिर तरुणाई, विषयाचिंता घणीजी ॥ ७ ॥
बहु इष्टवियोगाजी, अरु अशुभ संयोगाजी ।

तातें दुख भुगते, खिण समता नांहींजी ॥ ८ ॥
तीजो पन आयोजी, वहु रोग सतायोजी ।
इह विध दुख पायो, मानुषभवमें सहीजी ॥ ९ ॥
सुरपदवी मांहींजी, माला मुरझाईजी ।
चिन्ता दुखदाई भोगी मरणकीजी ॥ १० ॥
ई विध संसाराजी, ताको नहिं पाराजी ।
इह जाण असारा, त्यागि मुनी भएजी ॥ ११ ॥
गृह-भोग विनश्वरजी, जानैं योगीश्वरजी ।
परत्यागी अवनीश्वर, लीनी वनमहीजी ॥ १२ ॥
तप वहुविध कीन्होजी, निज आतम चीन्होजी ।
सकलागमभीनो, मुनिपद जे धरेंजी, ॥ १३ ॥
वहु ऋधिको धारेंजी, नहिं कारिज सारैंजी ।

आतमगुण पालें, लगे निज काजकोजी ॥ १४ ॥
विक्रियऋधिधारीजी, मुनिवर अविकारीजी ।
तिनके गुण भारी, कहांलों गुण वरणऊं जी ॥ १५ ॥
ऐसे मुनिवरकोजी, कब हो हम औसरजी ।
धनि धनि वह औसर, मुनि मोकूं मिलैजी ॥ १६ ॥
तिनके रजजी, धरि हैं शुभ शीर्षजजी ।
तवही हम कारज, बहुविध सरैजी ॥ १७ ॥
हम शरण तिहारीजी, भव भव सुखकारीजी ।
तातें हम धारी भक्ति हिरदा विषेंजी ॥ १८ ॥

दोहा ।

विक्रियऋधिधर मुनिनकी, कंठ धरे गुणमाल ।
मुनिस्वरूपको ध्यायकै, होवै बुद्धिविशाल ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं विक्रियर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा

सोरठा।

होय विघन सब नाश, मंगल नितप्रति हो सदा।
होय ऋद्धि परकास, पूजन जो या विध करै॥

इत्याशीर्वादः।

तपोतिशयऋद्धिधारक मुनिपूजा।

स्थापना।

अडिल्ल छंद।

तपोऋद्धिधर मुनी जहां तिष्ठै सही,
मरी आदि सब रोग तहां कुछ हो नहीं।
जातिविरोधी जीव वैर सबही तजैं,

शांति होनके काज थापि हमहू यजें ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिसहितसर्वऋषीश्वरसमूह अत्रावतरावतर संवौषट् । आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिसहितसर्वमुनीश्वरसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिसहितसर्वमुनीश्वरसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधापनम् ।

अष्टक ।

त्रिभंगी छंद ।

निर्मल शुभ नीरं, गंध गहीरं, प्रासुक सीरं ले आया ।
भरि कंचनझारी, धार उतारी, जन्म मृत्यु हर पद ध्याया ।
तपऋधिके स्वामी, शिवपद-गामी, शांति-करामी तुम ध्यावें ।
करि विघन विनाशं मंगलभासं हरि भव त्रासं गुण गावें ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयसहितसर्वमुनीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलय सुचंदन, कदली नंदन, भव-तप भंजनको लाया ।
तुम चरण चढामी, शिवसुखगामी, गुणधारी पूजन आया ।
तपऋधिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यश्चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सालि अखंडित, सौरभ मंडित, चन्द्र-किरणसे अनियारी ।
भूपतिको भोसर, हम इह औसर, पुंज करूं शिव-पदकारी ।
तपऋधिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

गुंजत बहु भृंगं, पुष्पसुगंधं, कल्पवृक्षके शुभ ल्यायो ।
हरि बाण मनोजं, पद अंभोजं, पूजन कारन मैं आयो ।
तपऋधिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घेबर बाबर, फेणी मोदक, चेद्रक सुवरण थालभरे ।
रसनाके रंजन, रसके पूरे, पूजन रोग क्षुधादि हरे ।
तपऋधिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कनकरकाबीमें मणिदीपक ललित ज्योति करि अति प्यारे ।
मोह-तिमिर विध्वंसन कारन चरण-कमल पर हम वारें ।
तपऋधिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर तगर मलयागिरि चंदन, केलीनंदन धूप करी ।
स्वर्ण सुपायन संग हुताशन खेवत भाजें कर्म-अरी ।
तपऋधिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुष्ठु मिष्ठ बादाम जायफल दाख पूग श्रीफल भारी।
एला आदि फलनितें पूजूं मुक्ति मिलावन भरि थारी।
तपऋद्धिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ नीर मलियागिरि चंदन अखित पुष्प नेवज भारी।
दीप धूप फल स्वर्णथाल भरि अर्घ चढाऊं सुखकारी।
तपऋद्धिके स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकपूजा

दोहा

तपतऋद्धिधर तपत नित, हरत उपद्रव-वृन्द।
षट् ऋतु तरुवर फल फलत, अरचत सकल नरिन्द॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धिसहितेभ्यः सर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल—आओजी आओ सब मिल जिन चैत्यालय चालो ।

एक वास करि घटै नहीं फिर अधिक अधिक विस्तारे ।
ए ये ही जी उग्रतपोऋधि-धारक मुनी भव त्यारे ।
राज आओजी आओ सब मिल मुनिवर पूजन चालां ।
मुनिजीके दर्शन-जलतें कर्म-कलंक पखालां । राज० ॥

ॐ ह्रीं उग्रतपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यो ऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

बहुत वास कर खीण भयो तन अधिक दीप्तता धारै ।
ये ही जी दीप्ततपोऋधि सुख सुगंध विस्तारें । राज० ॥

ॐ ह्रीं दीप्ततपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

हार करत नीहार होत नाहिं सौख्य भरा तनमांहीं ।
ये ही जी तप्ततपोऋधि धारक मुनी अरचाहीं । राज० ॥

ॐ ह्रीं तप्ततपोतिशयऋद्धिप्राप्तमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा

मति श्रुत अवधि ज्ञान कर सूक्षम त्रसनाडीके मांहीं,

जानैं सवहु भाव जीवनके महातपोऋधि याही। राज० ॥
ॐ ह्रीं महातपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग व्यथा उपजत मुनिजन तो उपवासादि कराई।
चिगैं नहीं तप ध्यान नियमतें धार तपोऋधि याही। राज०॥
ॐ ह्रीं घोरतपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घोरपराक्रमऋधिके धारक तिनको दुष्ट सतावै।
ता कारणतें सर्व देशमें मरी आदि भय आवै। राज० ॥
ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अघोरब्रह्मचर्य-धार मुनि तिष्ठत जहँ सुखदाई।
मरी आदि सब रोग मिटत तहाँ ऋद्धि वृद्धि अधिकाई।राज०॥
ॐ ह्रीं घोरब्रह्मचर्यतपोतिशयऋद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा।

उग्रतपादिक ऋद्धि, ब्रह्मचर्यलों सात सब।
धारक मुनी समृद्ध, पूजें अर्घ चढायके ॥

ॐ ह्रीं उग्रतपोतिशयादिघोरब्रह्मचर्यान्तसप्ततपोतिशयर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला।

दोहा।

तपोऋद्धि धारक मुनी भए सकल गुणपाल।
तिनकी थुति मैं करत हूं, ग्रंथ गुणनिकी माल ॥

ढाल आगमकी।

तपऋधि धारक जे मुनी, वंदूं तिन शीस नवाई जी ॥ टेर ॥
कर्म निर्जरा करनकूं संवर करि शिव-सुखदाई जी।
बाह्य अभ्यंतर तप करै द्वादश विध वे हरषाई जी ॥ तप० ॥१॥

षष्ठम अष्टम आदि दे उपवास करै षट् मासा जी ।
अनशन तप इह विध धरै छांडै सब तनकी आसा जी ॥ तप० ॥
बत्तीस ग्रास भोजन-तणों तिनमें घट घट ले आहारो जी ।
ऊनोदर तपको करै मम अशुभ कर्म निरवारो जी ॥ तप० ॥
वृत्ति अटपटी धारिकै भोजन कारि हैं अविकारो जी ।
व्रतपरिसंख्या तप तणी विध धार करै विस्तारो जी ॥ तप० ॥
षट्रस-मय भोजन विषैं रस त्याग लेत आहारो जी ।
रस-परित्याग जु तप करै मोकूं भव-सागरतें त्यारो जी ॥ तप० ॥
ग्राम पशू जन नांहिं तहां पर्वत वन नदी-किनारो जी ।
शून्य गुफामें जे रहें विविक्तशय्यासन धारो जी ॥ तप० ॥
ग्रीषमऋतु पर्वत-शिखरपै वर्षामें तरुतल ध्यानो जी ।
शीत नदी-तट चोहटे तप कायक्लेश महानो जी ॥ तप० ॥

बाहिज षट् विध तप यही सब कर्म निर्जरा थानो जी।
आभ्यंतर तप भेदको धारत पद हो निरवाणो जी। तप० ॥
प्रायश्चित दस भेदतें सोधै संयमको अतिचारो जी।
रातादिवसमें दोष जे लागे तिनको निरवारो जी। तप० ॥
दर्शन ज्ञान चरित्रको अरु तपको विनय करावै जी।
इनके धारकको करै सो विनयाचार कहावै जी। तप० ॥
दस प्रकारके मुनिनकी धरै भक्ति हृदयके मांहीं जी।
टहल करै मृति रोगमें वैयावृत तप सुखदाई जी। तप० ॥
वाचन प्रच्छन चिंतवन अरु आज्ञासर्वज्ञ धारै जी।
धर्मोपदेश विधि पंचमो तप स्वाध्याय संभालै जी। तप० ॥
बाह्य अभ्यंतर उपधिकूं त्याग करै समभावो जी।
तप व्युत्सर्ग महान यह तन ममत तज्यो करि चाहो जी। तप० ॥

आर्त रौद्र दुर्ध्यान हैं तिनको मन वच तन त्यागै जी।
धर्म शुकल शुभ ध्यान द्वय ध्यावै तिनकूं अनुरागै जी। तप० ॥
ऐसे द्वादस तप तपे तिनके हो केवलज्ञानो जी।
सकल कर्मको नाशिकै पावत है निर्वाणो जी। तप० ॥
ऐसे मुनि तिष्ठत जहां तहां मरी आदि सब रोगा जी।
सर्प डाकिनी नशै साकिनी भूत प्रेत सब शोका जी।
ऐसे गुरु हमको मिलें तब होवे हम निस्तारो जी।
यातें मुनि-चरणन-विषें अब लाग्यो ध्यान हमारो जी। तप० ॥

दोहा।

सुनो हमारी वीनती, हे ऋषिवर! चित लाय।
निजस्वरूपमय मो करो, पूजूं मन वच काय॥

ॐ ह्रीं तपोतिशयर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यो जयमालार्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दयामयी जिनधर्म यह, वृद्ध होउ सुखकार ।
सुखी होउ राजा प्रजा, मिटो सर्व दुखभार ॥

इत्याशीर्वादः ।

पंचम कोष्ठस्थ बलऋद्धिधारकमुनि-पूजा ।

स्थापना ।

लक्ष्मीधरा छन्द ।

धरत सिर धरत सिर धरत सिर चरन तर ।
करत हम करत हम करत गुरु भक्तिवर ।
थपत इत थपत इत थपत बल ऋषि-चरन ।
बलऋद्धि बलऋद्धि बलऋधि अर्चन करन ॥

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह अत्रावतरावतर संवौषट् । आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम्।
ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधापनम्।

अष्टक।

चाल जोगीरासा।

क्षीरोदधि पदमादि द्रहनिको गंगादिक जल लायो।
रतन जडित भृंगार धार दे श्रीगुरु-चरन चढायो।
जन्म जरा मृति नाश होत पुनि कर्म-कलंक हराई।
बलऋधि-धार मुनीश्वर पूजत बल अनंत हो जाई॥
ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चन्दनके माहीं केसर रंग मिलावें।
कर्पूरादि सुगंध द्रव्य ले तामें मेलि घसावें।
मोह-आताप हरत भ्रम नाशत तम अज्ञान नशाई।

बलऋधि-धार मुनीश्वर० ॥ चंदनं० ॥
आखित अखंडित सौरभि मंडित चन्द्र-किरणसे श्वेतं ।
जलप्रक्षालित कनकथाल भरि पुंज करूं शुभ हेतं ।
परम अखंडित पद हो यातें अनुपम सुख अधिकाई ।
बलऋधि-धार मुनीश्वर० ॥ अक्षतान् ॥
मेरु मंदार सुपारिजातके हरिचंदनके लावें ।
चांदी सुवरण कमल मनोहर घ्राण रु चक्षु सुहावें ।
काम-वाण विध्वंसन कारन श्रीगुरु-चरन चढाई ।
बलऋधि-धार मुनीश्वर० ॥ पुष्पं ॥
रोग क्षुधा यह नितप्रति मोकूं दुख देवे अति भारे ।
ताके नाशन कारन नेवज फेणी मोदक तारे ।
चंद्रिक गुंजा घेवर बाबर कनकथाल भरवाई ।

वलऋधि-धार मुनीश्वर० ॥ नैवेद्यं ॥
दीप रत्नमय कर्पूरादिक स्वर्ण-रकावी धारें।
जगमग जगमग ज्योति करत है श्रीमुनि-चरण उतारें।
मोह निविड विध्वंसन हो निज ज्ञान उद्योत कराई।
वलऋधि-धार मुनीश्वर० ॥ दीपं ॥
अगर तगर मलयागिर चंदन धूप दशांग बनावें।
गुंजत भृंग सुगंध मनोहर खेवत दस दिसि धावै।
कर्म उडैं मानुं धूम्र मिसानितें आतम उज्ज्वल थाई।
वलऋधि-धार मुनीश्वर० ॥ धूपं ॥
ज्ञानावरणी दर्शनावरणी मोहकर्म दुखदाई।
वेदन नाम रु गोत अंतरा शिव-मग रोक कराई।
तिनकुं हरि कर शिव-फल पावन श्रीफल आदि चढाई।

बलऋधि-धार मुनीश्वर० ॥ फलं ॥

जल गंधाक्षत पुष्प जु नेवज दीप धूप फल भाई।
अष्ट द्रव्य ले कनक-थाल भर अर्घ करूं गुण गाई।
झं झं झं झं झांज बजावत द्रम द्रम द्रम मिरदंग धुनाई।
नृत्य करत नूपुर झंकारत मुनिपद अर्घ चढाई ॥

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकपूजा।

दोहा।

बलऋधि-धार मुनिंदवर, भये कर्म-मल छेद।
अर्घ प्रत्येक चढायके, पूजूं ऋधिके भेद ॥

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सवैया तेइसा तथा कुसुमलता छंद।

एक घाट एकट्ठी परिमित श्रुतज्ञान अक्षर सब तिनको।

मन करकै सव अर्थ विचारै एक मुहूरत-मांहीं जिनको।
मनोवली यह ऋद्धि कहावत ताहि धरै तिन श्रीमुनिवरको।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ लेय करि निशि दिन पूजत चरण-कमलको॥

ॐ ह्रीं मनोवलऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांगमय श्रुतज्ञानको पाठ करैं मुनिवर उच्चस्वर।
एक मुहूरतमाहीं सवको स्वर व्यंजन मात्रादि शुद्धवर।
तालव कंठ खेद नहिं होवे बचनवली है सो ही ऋषिवर।
तिनके चरन-कमलको पूजूं अष्टद्रव्यको धार अरघकर॥

ॐ ह्रीं वचनवलर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

एक वरस काउतसग धारै अचल अंग चल आसन नाहीं।
तीन लोक चटी अंगुलतें ऊंच नीच वलतें जु कराई।
गर्भ करैं नहिं ऐसे वलको वही मुनीश्वर शिवपद-दाई।
कायवली यह ऋद्धिधार ऋषि तिन्हें पूज हम सीस नवाई॥

ॐ ह्रीं कायबलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा ।

ऐसी बलऋधि-धार, जे मुनि ढाई द्वीपमें ।
तिनकी पूजन सार, करिहूं अर्घ चढायकें ॥

जयमाला ।

सोरठा ।

गुणको नांहीं पार बलऋधि-धारी मुनिनको ।
पढूं अबै जयमाल, भक्ति थकी बाचाल हो ॥ १ ॥

दोहा ।

ढाल—हमारी करुणा ल्यो जिनराय ।

बलऋधि-धर मुनिराजके, चरण-कमल सुखदाय ।
बार बार बिनती करूं, मन वच सीस नमाय ॥हमारी०॥२॥
थावर जंगम जीवके, रक्षक हैं मुनिराय ।
मोहि कर्म दुख देत हैं, इनतें क्यों न छुडाय ॥ हमारी० ॥३॥

राजऋद्धि तज बन गए, धर्‍यो ध्यान चिद्रूप ।
ऋद्धि आय चरणां लगी, नमन करत सब भूप ॥ हमारी०॥४

तप-गज चढ़ि रण-भूमिमें, क्षमा-खडग कर धार ।
कर्म-अरिनतें जय करी, शांति-ध्वजा करि लार ॥हमारी०॥५

निराभरण तन अति लसै, निरअंबर निरदोष ।
नगन दिगंबर रूप है, सकल गुणनिको कोप ॥ हमारी० ॥६ ॥

क्रोध कपट मद लोभको, किंचित् नहिं लवलेश ।
मूरत शांति-दया-मयी, वंदत सकल सुरेश ॥ हमारी० ॥ ७ ॥

तुम ऋषि दीनदयाल हो, अशरणके आधार ।
वार वार विनती करूं, मोहि उतारो पार ॥ हमारी० ॥ ८ ॥

जो त्रिभुवनके सब मिलैं, दानव मानव इंद ।
हलै चलै नहिं सबनितें, बलऋधि-धार मुनिंद ॥हमारी०॥९॥

मैं दुखिया संसारमें, तुम करुणानिधि देव।
हरौ दुःख ये मों तणों, करिहूं तुम पद सेव॥ हमारी० ॥ १०॥
तुम समान संसारमें, तारणतरण जिहाज।
हे मुनीश! कोऊ नहीं, यातें तुमको लाज॥ हमारी० ॥ ११॥
तुम पद मस्तक हम धरें, भरी भक्ति उर मांहिं।
निजस्वरूप-मय कीजिए, भव-संतति मिट जाहिं॥ हमारी० ॥

घत्ता।

हे करुणानिधि सकल गुणाकर, भक्ति हृदय हम तुम धारी।
इहभव दुखहरि अनुपम सुखकरि ऋषिवर बलऋधिके धारी॥ १२॥

ॐ ह्रीं बलर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यो जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद।

सात ईति भय मिटै देश सुखमय वसै।
प्रजा-मांहिं धन धान्य महर्द्धिकता लसै।

राजा धार्मिक होय न्यायमगमें चलै ।
या पूजन फल येह धर्म जिनवर झिलै ॥

इत्याशीर्वादः ।

षष्ठ कोष्ठस्थ औषधऋद्धिधारकमुनीश्वर-पूजा ।

स्थापना ।

सवैया तेईसा ।

औषधऋद्धि-धार मुनी अविकार धरैं तप भार महा अधिकाई।
तिनके तनकी परछांहिं परै तहां रोग विषाद अनेक नसाई ।
ऐसे मुनिराज करें सब शांति हरें भव-भ्रांति जिनेशकी नाई।
थापत हूं हम पूजन काज हरो मम विघ्न कल्याण कराई ॥

ॐ ह्रीं क्षुद्रोपद्रवसर्वविघ्नविनाशकौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह अत्राव-तरावतर संवौषट्। आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं क्षुद्रोपद्रवसर्वविघ्नविनाशकौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ-ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्षुद्रोपद्रवसर्वविघ्नविनाशकौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधीकरणम् ।

अष्टक ।

चाल–आशावरी तथा होली की।

रतन जडित भृंगार मध्य शुभ भरकर प्रासुक जलकों ।
धार देत ही नाश करत है सब कर्मादिक-मलकों ।
यजूं मुनि-चरण-कमलकों, औषधि ऋद्धि-धीश यतीश
यजूं मुनि-चरण-कमलकों ॥

ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रवसर्वविघ्नविनाशकेभ्यः सर्वरोगहरेभ्यः सर्वशांतिकरेभ्यः औषधिऋद्धिधारकमुनिश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव-आताप बढयो अति भारी शोषत मोय निबलकों ।

चन्दन केसर चरण चढाऊं पाऊं पद निर्मलकों ।
यजूं मुनि-चरण-कमलकों० ॥ चन्दनं ॥
स्वर्णथाल भरि चंद-किरण-सम ल्यायो अखित उजलकों ।
अक्षय पद पावन कारन पूजूं श्रीगुरु पाद-कमलकों ।
यजूं मुनि-चरण-कमलकों० ॥ अक्षतान् ॥
काम-शत्रु मो अधिक सतावे आतम ल्यावत मलकों ।
याके नाश करनके कारन मुनिपद क्षेपि कमलकों ।
यजूं मुनि-चरण-कमलकों० ॥ पुष्पं ॥
क्षुधावेदनी रोग महा दुठ जारत हृदय-कमलकों ।
नाना विध नेवजतें पूजूं शांति-करन क्षय मलकों ।
यजूं मुनि-चरण-कमलकों० ॥ नैवेद्यं ॥
दीप रतनमय ज्योति मनोहर नाश करत तन-मलकों ।

ज्ञान उद्योतन कारन पूजूं श्रीगुरु-पाद-कमलकों।
यजूं मुनि-चरण-कमलकों० ॥ दीपं ॥
अगर तगर मलयागिर चंदन केलानंद विमलकों।
खेवत धूप दशांग अग्नि सँग जारत है अघ-मलकों।
यजूं मुनि-चरण-कमलकों० ॥ धूपं ॥
विविध भांतिके स्वर्णथाल भरि ल्यायो मैं शुभ फलकों।
शुद्ध भाव करि नितप्रति पूजूं शिव-सुख पाउं विमलकों।
यजूं मुनि-चरण-कमलकों० ॥ फलं ॥
जल चंदन अक्षत अरु पुष्प जु नेवज दीप विमलकों।
धूप फलादिक अर्घ चढाये पावत पद निर्मलकों।
यजूं मुनि-चरण-कमलकों, औषधऋधि-धीश यतीश
यजूं मुनि-चरण-कमलकों० ॥ अर्घं ॥

प्रत्येक पूजा ।

दोहा ।

औषधऋद्धिके भेद वसु, ता धारक ऋषिराय ।
भिन्न भिन्न तिनके चरण, पूजूं अर्घ चढाय ॥

ॐ ह्रीं अष्टभेदौषधऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल छन्द ।

अंग उपांग रु नख केशादिक सर्व ही ।
रज पद मुनिकी लगत हरत जू रुज मही ।
आमर्शौषधिऋद्धि याहि मुनिवर धरैं ।
ता ऋषिवरके पाद यजत शिव-तिय वरैं ॥

ॐ ह्रीं आमर्शौषधिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुनि-मुखको खंखार थूकके लगत ही ।
सर्व रोग मिट जाय असाध्य जु तुरत ही ।

खेलौषधि ये ऋद्धिधार मुनिवर तणैं।
पाद-पद्म हम यजत व्याधि सब ही हणैं॥
ॐ ह्रीं खेलौषधिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिके अंगके स्वेदमाहिं जो रज परै।
सो लागत ततकाल व्याधि सब ही हरै।
यह जल्लौषधिऋद्धि-धारकूं नित यजूं।
निसदिन तिनके चरण-कमलकूं मैं भजूं॥
ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दंत नासिका अंग मैल-मल सर्व ही।
व्याधि सर्वको नाश करत है लगत ही।
मल्लौषधिऋधि यह ताहि धारक मुनी।
पूजत मन वच काय अर्घ करके गुनी॥

ॐ ह्रीं मल्लौषधिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विष्टा मूत्र जु वीर्य सर्व ऋषिराजके।
नाना व्याधि-हरंत लगत ही साधके।
ऋद्धि विडौषध-धार तास पायन परैं।
अष्ट द्रव्यकूं मेल सदा पूजन करैं॥

ॐ ह्रीं विडौषधऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके तनसूं पवन लागि जा तन लगै।
आधिव्याधि बहु रोग विषादिक सब भगै।
भूत प्रेत सर्पादि सिंहको भय मिटै।
सर्वौषधिऋधि-धार पूजतें अघ हटै॥

ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके करमें अमृत होय विष सर्व ही।
मूर्छित निरविष होत वचन सुन तुरत ही।

आस्यविषौषधिऋद्धि-धार ऋषिवर तिन्हें ।
पूजूं मन बच काय शुद्ध करिके जिन्हें ॥

ॐ ह्रीं आस्यविषौषधिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

थावर जंगम सर्प आदिको भय भरै ।
दृष्टि परत ततकाल सर्व छिनमें हरै ॥
दृष्टिविषौषधिऋद्धि-धार मुनिराजकूं ।
मन बच तन करि पजूं मिटन सब व्याधिकूं ॥

ॐ ह्रीं दृष्टिविषौषधिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा ।

सर्वौषधिऋधि-धार, सर्व मुनीश्वर हैं जिन्हें ।
बसु द्रवतें भरि थार, पूजूं अर्घ चढायकैं ॥

ॐ ह्रीं आमर्शौषधिऋद्धिधारकादिदृष्टिविषौषधिऋद्धिधारकपर्यन्तसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला ।

दोहा ।

जिनके वंदत पूजतें, सकल व्याधि मिट जाय ।
औषधऋधि-धर मुनिनकूं, नमूं नमूं मनलाय ॥ १ ॥

चाल बीजाकी ।

जय सर्वौषधिऋधिके धार मुनिराय,
मन वच वंदूंजी मैं सीस नवाय ऋषिवरजी ।
नग्न दिगंबर हो परम पवित्र है चित अति अमलान,
करुणा-सागर हो दया-निधान ऋषिवरजी ॥ २ ॥
दरस करत ही हो वात पित्त कफ खांस रु सांस,
ज्वर शीतादिक हो दाह हुलास ऋषिवरजी ।
कुष्ट उदम्बर हो कालज्वर अरु सब सानिपात,

साध्य असाध्य जु हो सब रोग नसात ऋषिवरजी॥३॥
पंगु पुरुषकै जी चरण है गिरि शिखर चढ़ंत,
जन्मअंधकूं जी सब सूझंत ऋषिवरजी।
गूंगा बोलत है हो बचन शुभ मुनिवर परताप,
सब जीवके होवे जी सुंदर गात ऋषिवरजी ॥ ४ ॥
सिंह व्याघ्र उनमत्त गज सब भय मिट जाय,
तुम पद ध्यावे जी जो लव ल्याय ऋषिवरजी।
कृष्ण सर्प तुम नामतें लटसम हो जाय,
श्वान स्याल वृश्चिकको भय न रहाय ऋषिवरजी ॥५॥
डायनि सायनि योगिनी ये दूर भजाय,
भूत प्रेत ग्रह दुष्ट जु हो! तुरत नसाय ऋषिवरजी।
तुम नाम-मंत्रतें हो! अग्नि जलसम हो जाय,

सिंधु भयानक जीव थलसम थाय ऋषिवरजी ॥ ६ ॥
हृदय-कमलमें तुम नामको जो ध्यान कराय,
नृप-भय ताके जी हो कछु नांय ऋषिवरजी ।
विघ्न अनेक जु जी नाश हो शुभ मंगल थाय,
जो नर ध्यावे जी मन वच काय ऋषिवरजी ॥ ७ ॥
सर्वौपधिऋधि-धार जी जहँ करत विहार,
दुरभिक्ष रहै नहीं जी ता देश मंझार ऋषिवरजी ।
आधि व्याधि भय देशके सब मिट जाय,
सब जीवां के जी अति सुख थाय ऋषिवरजी ॥ ८ ॥
वह मुनि जा वनके विषें शुभ ध्यान करात,
जाति-विरोधी हो! वैर नसात ऋषिवरजी ।
षट्ऋतुके हो! फूल फल सब वृक्ष फलंत,

सूखे सरवर हो ! तुरत भरंत ऋषिवरजी ॥ ९ ॥
नाम तिहारो जो जपै मन बच तन तिरकाल,
जो भवि गावै जी तुम गुणमाल ऋषिवरजी ।
भोग संपदा हो ! वो नर पायकै फिर इंद्र पदाय,
शिवसरूप मय होवै जी निज आस्वाद ऋषिवरजी ॥ १० ॥

घत्ता।

औषधऋधि-धारी मुनि अविकारी भक्ति तिहारी हृदय धरी ।
करि पूजा सारी अष्टप्रकारी यह गुणमाला कंठ धरी ॥

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो जयमालार्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल छंद ।

आधि व्याधि कर नाश सर्व भयकूं हरो ।
ऋद्धि वृद्धि घरमाहिं सकल संपति भरो ।

जिनधर्मी जनमाहिं सकल मंगल करो ।
या पूजन परताप विघ्न सब ही हरो ॥

इत्याशीर्वादः ।

सप्तमकोष्ठे रसऋद्धिधारकमुनि-पूजा ।

कुंडलिया ।

रसऋधि-धार मुनिंदके, चरण-कमल सिरनाय ।
वंदूं मन वच काय करि, भाव भगति चित लाय ।
भाव भगति चित लाय करूं मैं शुभ आह्वानन ।
आप पधारो नाथ तिष्ठ इत यह संस्थापन ।
निकट होहु मम वार वार विनती यह मेरी ।
पूज करत चित चाह हमारे ऋषिवर तुमरी ॥

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनिसमूह अत्र अवतरावतर संवौषट्। आह्वाननम् ॥
ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनिसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनिसमूह अत्र सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधापनम् ॥

अष्टक।

सुन्दरी छन्द।

विमल केवल उज्ज्वल ल्यायकै, सुर नदी-जल भृंग भरायके।
जनम मृत्यु जरा क्षयकारकं, मुनि यजामि ऋधिरस धारकं ॥

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज कर्म-कलंक बिनाशनै, मलय उद्भव गंध सुगंधनै।
कदलि-नंदन कुंकुम वारिके, मुनि यजामि० ॥ चंदनं ॥
अखित उज्ज्वल दीर्घ अखंडकं, किरण चन्द्र समान सुद्योतकं।
अतुल सौख्य सुथान सुदायकं, मुनि यजामि० ॥ अक्षतान् ॥

प्रचुर गंध सुपुष्प सुमालया, भ्रमर गुंजत सौरभ धारिया।
निविड़ बाण मनोभव वारकं, मुनि यजामि० ॥ पुष्पं ॥

सुरन पात्र भरे नैवेद्यके, घृत सुचारु रसादिक सज्यके।
प्रचुर रोग क्षुधादि निवारकं, मुनि यजामि० ॥ नैवेद्यं ॥

रतन दीप मनोज्ञ उद्योतके, सुरन पात्र धरे शुभ ज्योतिके।
निरवधी स्वविकाश प्रकाशकं, मुनि यजामि० ॥ दीपं ॥

अगर चन्दन धूप सुधूपने, अति-समूह भ्रमैति सुगंधने।
कर्म-काष्ठ-समूह सुजारकं, मुनि यजामि० ॥ धूपं ॥

सुभग मिष्ट मनोज्ञ फलावली, हरत घ्राण सुचक्षु सुखावली।
मुकति थान मनोहर दायकं, मुनि यजामि० ॥ फलं ॥

जल सुगंध सुतंदुल पुष्पके, चरु सुदीप सुधूप फलार्घके।
पद अनर्घ महाफल दायकं। मुनि यजामि० ॥ अर्घं ॥

ेक पूजा ।

सोरठा ।

रसऋधि षट् परकार, तिनके धारक जे मुनी ।
रोग क्षुधा निरवार, पूजूं अर्घ चढायकै ॥

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकषट्प्रकारमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौपई ।

कर्म-उदय कोउ पार न पाय, क्रोध थकी मर वच निकसाय ।
सो प्राणी ततकाल मराय । ते आशीविष यजन कराय ॥

ॐ ह्रीं आशीविषरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्रोध दृष्टि मुनिकी जू परै, परते ही ततकाल जु मरै ।
दृष्टिविषारसऋधि-धर मुनी । यजन करूं मैं तिनकूं गुनी ।

ॐ ह्रीं दृष्टिविषरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षीर रहित जहँ हार ज्जु कोय, सो मुनि कर रस दुग्ध ज्जु होय।
वचन दुग्ध सम पुष्टि कराय। क्षीरस्रावि-धर अरचूं पाय॥

ॐ ह्रीं क्षीरस्राविरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ट रहित जो मुनि कर हार। होय मिष्टरस सहित ज्जु सार।
मुनि वच पुष्ट करत मधु समा। मधुस्रावीऋधि पूजत हमां॥

ॐ ह्रीं मधुस्राविरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत करि रहित हार कर मुनी, घृत-संयुक्त होय बहु गुनी।
वच मुनिके घृतसम गुण करैं, सर्पिस्रावि रस पूजन करें॥

ॐ ह्रीं सर्पिस्राविरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विष अमृत मुनि कर है जाय, वच अमृतसम पुष्टि कराय।
अमृतस्राविरसऋधि यही, ता धर पूजे है शिव-मही॥

ॐ ह्रीं अमृतस्राविरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा।

ये रसऋधिके भेद युत, सर्व ऋषीश्वर पाय।
मन बच तन करि पूजिहूं, हरषित चित अधिकाय ॥

ॐ ह्रीं आशीविषरसऋद्ध्यादिअमृतस्राविऋद्धिपर्यंतधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला।

सवैया तेईसा।

रसपरित्याग धर्‌यो मुनिराज, तिन्हें फल ये रसऋद्धि उपाई।
हार रसादिक त्याग करै, तिनके पद बंदन शीस नवाई ॥
सो ऋषिराज करो हम काज, हरो अघसाज जु पुण्य बधाई।
मन-वच-काय त्रिकाल त्रिकाल, धरूं तिनपाद सदा उरमाहीं ॥

दोहा।

ढाल वीर जिनंदकी।

ऋषीश्वर वसो हृदयके माहिं ॥ टेर ॥

दुष्ट कहे मुनिराजकूं, कर्कश वचन महान।
अति कठोर कटु निंद्य सुन, क्रोध करै नहिं मान ॥२॥ ऋषी०॥

कुल जात्यादिक बुद्धिको, तपको नाहिं अभिमान।
कोमल उर करुणामयी, मार्दवधर्म महान ॥३॥ ऋषी० ॥

कूट कपट सव त्यागियो, रंच न हिरदा माहिं।
आर्जव धर्म यही धरै, मन वच वंदूं ताहि ॥४॥ ऋषी० ॥

हित मित सत्य जु वाक्यकूं, वोलत वे मुनिराय।
धर्मोपदेशतें अन्य कछु, वोलत नाहिं सुभाय ॥ ऋषी० ॥ ५ ॥

लोभ सर्व जिनको गयो, धरि संतोष महान।
शोच धर्म यह धारिकै, भए चित्त अमलान ॥ ऋषी० ॥ ६ ॥

छहों कायके जीवकी, करुणा है अधिकाय ।
पांचों इंद्रिय बश करी, संयम धर चित लाय ॥ ऋषी० ॥ ७ ॥
द्वादश बिध तपको तपैं, अंतर बाह्य महान ।
ध्यावें निज चिद्रूपकूं, ध्यान सुधारस पान ॥ ऋषि० ॥ ८ ॥
सर्व परिग्रह त्यागकर, ज्ञानदान नित देय ।
जाति जीवकूं अभय दे, त्यागधर्म धरि एव ॥ ऋषि० ॥ ९ ॥
बाह्य नगनता अति लसै, अंतरंग अति शुद्ध ।
ममत तज्यो निज देहसें, आकिंचन व्रत इद्ध ॥ ऋषि० ॥ १० ॥
सहस अठारा शीलकूं, पालन मन बच काय ।
ब्रह्मचर्य व्रत यह धर्‍यो, आतममें रति थाय ॥ ऋषि० ॥ ११ ॥
या विधि दसैं प्रकारको, जिनभाषित जो धर्म ।
ताहि शुद्ध धार्‍यो मुनी, मेटि पापके कर्म ॥ ऋषि० ॥ १२ ॥

दोहा।

ढाल वीर जिनंदकी।

ऋषीश्वर बसो हृदयके माहिं ॥ टेर ॥

दुष्ट कहै मुनिराजकूं, कर्कश वचन महान।
अति कठोर कटु निंद्य सुन, क्रोध करै नहिं मान ॥२॥ ऋषी०॥
कुल जात्यादिक बुद्धिको, तपको नहिं अभिमान।
कोमल उर करुणामयी, मार्दवधर्म महान ॥३॥ ऋषी० ॥
कूट कपट सब त्यागियो, रंच न हिरदा माहिं।
आर्जव धर्म यही धरै, मन बच बंदूं ताहि ॥४॥ ऋषी० ॥
हित मित सत्य जु वाक्यकूं, बोलत वे मुनिराय।
धर्मोपदेशतें अन्य कछु, बोलत नाहिं सुभाय ॥ ऋषी० ॥ ५ ॥
लोभ सर्व जिनको गयो, धरि संतोष महान।
शौच धर्म यह धारिकै, भए चित्त अमलान ॥ ऋषी० ॥ ६ ॥

अष्टमकोष्ठेअक्षीणमहानसर्द्धिधारकमुनि-पूजा ।

आडिल्ल छन्द ।

अक्षयविधिके दायक घायक कर्मके ।
अखीण महानसऋद्धि-धार मुनिवर्यके ।
आह्वानन संस्थापन मम सन्निहित करूं ।
संवौषट् ठः ठः रु वषट् त्रय उच्चरूं ॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह अत्रावतरावतर संवौषट् । आह्वानं ॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनं ॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधीकरणं ॥

अष्टक ।

गीताछंद ।

हिमवन समुद्भव नीर सीतल रतनभृंग भरायही ।
जन्म जर अरु मृत्यु नासन क्षपक चरन चढायजी ।
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र पूजित अखयनिधि दायक सदा ।
अक्षयमहानसऋद्धि-धर मुनि पूजिहूं मैं सर्वदा ॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

काश्मीर चंदन केलिनंदन वसत परिमल दिग महै ।
अलि गुंज करत दिगंतराले पूजतें भव तप जहै ।
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र पूजित० ॥ चन्दनं ॥

सित असित चंद्रमरीचिका सम अति सुगंधित पावनां ।
भरि थाल कणमय अखयपदकूं चरन-कमल चढ़ावनां ॥

इन्द्र चंद्र नरेंद्र पूजित० ॥ अक्षतान् ॥
पंच वर्न प्रसून सुंदर गंधतें मधुकर भ्रमें ।
सो लेय मुनिपदकूं चढ़ोडें समरकूं छिनमें दमें ।
इन्द्र चन्द्र नरेंद्र पूजित० ॥ पुष्पं ॥
घेवर सुबावर मोदकादिक कनकथाल भराइये ।
चरु सवतें मुनि-चरन पूजें क्षुधारोग नसाइये ।
इन्द्र चन्द्र नरेंद्र० ॥ नैवेद्यं ॥
दीप मणिमय ज्योति सुंदर धूम्रवर्जित सोहने ।
तम मोह पटल विध्वंस कारन चरन युग मुनि अरचने ।
इन्द चन्द्र नरेन्द्र पूजित० ॥ दीपं ॥
धूप दसविध अगनिके संग स्वर्ण धूपायन भरें ।
धूम्र मिस वसु कर्म भाजैं भविक जन जय जय करें ।

इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र पूजित० ॥ धूपं ॥
दाख श्रीफल चारु पुंगी सुरन थाल भराइये ।
श्रीऋषीश्वर पूजते ही मुक्तिके फल पाइये ।
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र पूजित० ॥ फलं ॥
वीर गंध सुगंध तंदुल पुष्प चरु दीपक धरै ।
धूप फल ले सुरन भाजन अर्घ यजि शिवातिय वरै ।
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र पूजित० ॥ अर्घं ॥

प्रत्येक पूजा ।

सोरठा ।

द्विविध प्रकार सुजानि, अखीणमहानसऋद्धि यह ।
होय पापकी हानि, ता धारक मुनिवर यजत ॥

ॐ ह्रीं द्विविधप्रकाराक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

कुसुमलता छन्द ।

हार करै मुनिवर जाके घर ता दिन हार अटूट ह्वै जाई ।
चक्रवर्त्ति-सेना सब जीमें तो भी वा दिन टूटत नाहीं ।
वे अक्षीणमहानसऋधि-धर यतिवर बंदूं सीस नवाई ।
तिनके पद पूजत जो अहनिस नवनिधि हो जिनके घर माहीं ॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

च्यार हाथ घर माहीं मुनिवर तिष्ठत सब जीवन सुखदाई ।
ता थानक इंद्रादिक सब अरु चक्रवर्त्तिकी सैन्य समाई ।
भीर तहां नहिं होत सर्व जिय सुखमय तिष्ठत ता मधि भाई ।
अक्षीणमहानसऋद्धि-धार गुरु तिनकूं पूजूं मन बच काई ॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा ।

जो ऐसी ऋधिकूं धरैं, श्रीऋषिराज महान ।

तिनकूं पूजूं अर्घ दे, देहु यथारथ ज्ञान ॥

ॐ ह्रीं द्विविधाक्षीणमहर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला ।

कडखा छंद।

अक्षीणमहानसऋद्धि भरा, तिनके पद वंदत सर्व नरा ।
मैं ध्यावत हूं गुण गावत हूं, मो दीजे ऋषिवर सिद्धिधरा ॥

दोहा ।

ढाल—' ते गुरु मेरे उर वसो ' की, ' संसार असारियो'. 'दश भव'की, तथा गोपीचंदकी,—इन चारों चालमें ।

वे गुरु मो हिरदे बसो, तारन तरन जिहाज ॥ टेर ॥
पक्ष मासके पारणे, हार करणके काज ।
मुनिवर करत बिहार है, ईर्यापथकूं साज ॥ वे गुरु० ॥२॥
धनिक दारिद्री घर तणों, तिनके नाहीं भेद।

चांद्री चर्या धरत है, लाभ अलाभ न खेद ॥ वे गुरु० ॥ ३ ॥
अयाचीक जिन वृत्ति है, मुखतें नाहिं कहात ।
केवल देह दिखायके, खड़े रहत नाहिं भ्रात ॥ वे गुरु० ॥ ४ ॥
जो गृहस्थ शुभ भक्ति कर, प्रासुक जल भृंगार ।
जाहि दिखावे ताहि वह, खडे रहत तिह बार ॥ वे गुरु ॥ ५ ॥
प्रक्षालन मुनि-चरनको, पूज्य करैं हरखाय ।
मन-बच-काया शुद्ध करि, नमन करत सिर नाय ॥ वे गुरु० ॥ ६ ॥
तिष्ठ तिष्ठ मुनिराज इत, हार पान है शुद्ध ।
इह नवधा मुनि भक्ति लख, हार करत अविरुद्ध ॥ वे गुरु० ॥ ७ ॥
श्रद्धा शक्ति रु भक्ति जुत, ईर्षा लोभ हरंत ।
दया क्षमा ये गुण धरै, ता घर हार करंत ॥ वे गुरु० ॥ ८ ॥
षट् चालीस जु दोष तजि, अंतराय बत्तीस ।

चौदह मल वर्जित सदा, हार करत गुरु ईस ॥ वे गुरु० ॥ ९ ॥
मुनि आहार प्रभावतें, गृहस्थ घरानिके माहिं ।
देव करैं नभतें तहां, रत्नवृष्टि सुखदायि ॥ वे गुरु० ॥ १० ॥
कल्पवृक्षके पुष्प अरु, जल सुगंध वरसाय ।
धन्य दान दातार धनि, पंचाश्चर्य कराय ॥ वे गुरु० ॥ ११ ॥
धन्य दिवस धनि वा घडी, धनि मेरो तव भाग ।
ऐसे मुनिवरके विषें, करै दान अनुराग ॥ वे गुरु० ॥ १२ ॥
धन्य युगल पद होय तव, करो जाति ऋषिराज ।
धन्य हृदय हो ध्यानतें, ध्याऊं नित हित काज ॥ वे गुरु०॥१३॥
दरस करत तुव चरनको, चक्षु धन्य जब थाय ।
सफल करणयुग होय तब, वचन सुनै ऋषिराज ॥ वे गुरु०॥१४॥
पूज करूं तुव चरणकी, कर युग धनि जब थाय ।

सीस धन्य तब ही हमैं, नमन चरन ऋषिराय ॥ वे गुरु० ॥ १५ ॥
मो किंकरकी वीनती, सुनिये श्रीऋषिराय ।
भव-दधि दुखमयतें मुझे, डूबत काढो आय ॥ वे गुरु० ॥ १६ ॥
बार बार बिनती करूं, मन बच सीस नमाय ।
परसरूपमें हो रह्यो, मो निजरूप कराय ॥ वे गुरु० ॥ १७ ॥

घत्ता ।

उर निज ध्याऊं सीस नमाऊं गाऊं गुण ह्वै चेरा ।
पद अजरामर सकल गुणाकर द्यो मुझ हर भव-फेरा ॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योऽर्घं जयमालार्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल छन्द ।

अक्षीणमहानसऋद्धि-धार जो ऋषि यजै ।
ताके घरतें दुःख भार आपद भजै ।

ऋद्धि वृद्धि है असे सकल गुण सिद्धि है।
केवलज्ञान लहाय अचल सम सिद्ध है॥

इत्याशीर्वादः।

पंचमकालकी आदिमें हुए मुनिराजोंको अर्घ।

चौपई-रूपक।

गौतमस्वामी सुधर्म जु स्वामी, जंबूस्वामी अति अभिरामी।
वीर जिनेंद्र पछै त्रय नामी, बासठि वर्ष मध्य शिवगामी॥ १॥
पंचमकाल आदिके माहीं, केवलज्ञान लह्यो सुखदाई।
तिनकूं पुजूं अर्घ चढाई, ता फल केवलज्ञान लहाई॥ २॥

ॐ ह्रीं वर्द्धमानजिनेन्द्रपश्चात् द्विषष्ठिवर्षमध्ये केवलज्ञानधारक मुनीश्वरत्रया-र्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विष्णूनान्दि मित्र मुनिराई, अपराजित गोवर्धन भाई।
भद्रबाहु ये पंच मुनिंदा, सब श्रुत धारक भए अनिंदा ॥ १ ॥
शत संवतसरमें सुखदाई, तिनके चरन नमूं सुखदाई।
बसु द्रव ले सब अर्घ चढाई, पूजत हूं मैं मन वच काई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं केवलीत्रयपश्चात्शतवर्षमध्ये पंचश्रुतकेवलिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विशाख प्रौष्ठिऊ क्षत्रिय जया, चारिज नागसेन मुनि हुया।
सिद्धारथ धृतिषेण मुनीशा, विजय बुद्धिलिंग है जु यतीशा॥१॥
अंगदेव धरसेन मुनिंदा, ये दश पूरब धरैं यतिंदा।
इकसौ त्यासी बरस मझारा, पूजूं मैं उतरै भव पारा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं विशाखाचार्यादिश्रुतकेवलिपश्चात् त्र्यशीत्युत्तरैकशतवर्षमध्ये दशपूर्वधारकैकादशमुनीभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नक्षत्रचारिज जयपाल मुनीसा, पांडव ध्रुवसेनादिक कंसा ।
चारिज पंच इकादश अंगा, बन्दन करत पाप हो भंगा ॥१॥
ये मुनि शत अरु वरस तेईसा, माहिं भए गुणगणके ईसा ।
पूजूं कर ले अर्घ मुनीसा, सकल दोष खयकार गणीसा ॥२॥

ॐ ह्रीं दशपूर्वधारकमुनिपश्चात् त्रयोविंशत्युत्तरैकशतवर्षमध्ये एकादश अंगधारकमुनीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुभद्र और यशोभद्र नामा, भद्रबाहु लोहार्य वखाना ।
चार घाट सत्याणव बरसा, माहिं भए दस अँग धर परसा ॥

ॐ ह्रीं एकादशांगधारकपश्चात् सप्तनवति (त्रिनवति)? वर्षमध्ये सुभद्रादिभ्यो दशांगधारकमुनिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऐलाचार्य जु माघ जु नंदी, धरसेनाचारज गुणवृंदी ।
पुष्पदन्त भूतबलि नामा, प्रथम अंग धारी अभिरामा ॥
सौ रु अठारा वर्ष जु माहीं, विद्यागुण करि सब अधिकाई ।

अर्घ लेय पद पूज कराई, तातें मो सब पाप नसाई ॥

ॐ ह्रीं दशांगधारकमुनिपश्चात् अष्टादशोत्तरशतवर्षमध्ये एलाचार्याद्येकांग धारकमुनिवरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनचंद्र कुंदकुंद मुनि इंदा, मुनिगणमें ज्यों उडगन चंदा ।
उमास्वामि सूत्रके कर्त्ता, समंतभद्र बहु दुखकें हरता ॥
शिवकोटी रु शिवायन स्वामी, पूज्यपाद बंदूं गुणधामी ।
एलाचार्य वीरसेन जानों, जिनसेन नेमिचन्द्रनैं मानों ॥
रामसेन तार्किक गुणधारी, अकलंकस्वामी बौध जितारी ।
विद्यानंदी माणिकनंदी, प्रभाचन्द्र भव भय हर फन्दी ॥
रामचन्द्र वासवचंद स्वामी, गुणभद्राचारज है नामी ।
वीरनंदि आदिक गुणस्वामी, सिद्धांत चक्रवर्ती गुणधामी ॥
नग्न दिगंबर विद्या ईसा, पंचमकाल आदि गुणधीसा ।

पंच महाव्रत धारत तिन पद सीस नायके मस्तक धारें ॥१॥

चाल—बाजा बजिया।

चरणां लागियो भला, मोहि त्यारोजी ऋषि दीनदयाल ॥ टेर ॥
शील महा नग धर नमूं मुनी, पंचेन्द्रिय संयम योग संयुक्त।
चरणां लागियो भला, मोहि त्यारोजी ऋषि दीनदयाल ॥ २ ॥
ग्यारह अंग धारक नमूं मुनी, फुनि चौदहजी पूरवके धार।चरणां०॥
कोष्ठऋद्धि धर नमूं मुनी, पादानुसार आकाश विहार।चरणां० ॥
जे मौन धार थित हार ले मुनी, जाण्यां राज रंक गृह सब इकसार। च०
जे पंच महाव्रत धर नमूं मुनी, जे समिति गुप्ति पालक वरवीर।च० ॥
जे देह मांहि विरक्त नमूं मुनी, ते राग रोष भय मोह हंत। च० ॥७॥
लोभ रहित संवर धरै मुनी, दुखकारीजी नास्यौ काम रु क्रोध ।च०॥
स्वेद मैलतें लिप्त हैं मुनी, आरंभ परिग्रहतें विरक्त। च० ॥ ९ ॥

पंच महाव्रत धारत तिन पद सीस नायके मस्तक धारें ॥१॥

चाल—बाजा बजिया।

चरणां लागियो भला, मोहि त्यारोजी ऋषि दीनदयाल ॥ टेर ॥
शील महा नग धर नमूं मुनी, पंचेन्द्रिय संयम योग संयुक्त।
चरणां लागियो भला, मोहि त्यारोजी ऋषि दीनदयाल ॥ २ ॥
ग्यारह अंग धारक नमूं मुनी, फुनि चौदह जी पूरवके धार।चरणां०॥
कोष्ठऋद्धि धर नमूं मुनी, पादानुसार आकाश विहार।चरणां० ॥
जे मौन धार थित हार ले मुनी,जाण्यां राज रंक गृह सब इकसार। च०
जे पंच महाव्रत धर नमूं मुनी, जे समिति गुप्ति पालक वरवीर। च० ॥
जे देह मांहि विरक्त नमूं मुनी, ते राग रोष भय मोह हंत। च० ॥७॥
लोभ राहित संवर धरै मुनी, दुखकारीजी नास्यौ काम रु क्रोध । च०॥
स्वेद मैलतें लिप्त हैं मुनी, आरंभ परिग्रहतें विरक्त। च० ॥ ९ ॥

पट् आवश्यक घर नमूं मुनी, द्वादशतप घर तन वे सोखंत। च० ॥
एक गास दोय लेत हैं मुनी, वे नीरस भोजन करत अनिंद। च० ॥
थिति मसान करते नमूं मुनी, जो कर्म डहर सोखनकूं दिनंद। च० ॥
द्वादश संयम घर नमूं मुनी, जो विकथा च्यार करी परिहार। च० ॥
दो वीस परीषह सह नमूं मुनी, संसार महार्णवतें उतरंत। च० ॥
जय धर्मबुद्धि थुति नृपकरे मुनी, जे काउसग्ग करि रात्रि गमंत। च० ॥
सिद्धि-रमा-वर वे नमूं मुनी, जे पक्ष मास आहार करंत। च० ॥१६॥
गोदोहन वीरासन धरें नमूं मुनी, सेज धनुष वज्रासन धार। च० ॥
तप बल नभ विहरे नमूं मुनी, वे गिरि गुहा कंदर करत निवास। च० ॥
सत्रुमित्र समचित धरें मुनी, मैं वंदूं दिढ़ चारितके धार। च० ॥१९
धर्म शुक्ल ध्यावें ध्यानकूं मुनी, मैं वंदूं पतिवर मोक्ष गमंत। च० ॥२०

चैंविास परिग्रह च्युत नमूं मुनी, ध्याऊं मुनिवर जगत पवित्त । च० ॥
रत्नत्रय करि शुद्ध हैं मुनी, तिनको मैं वंदूं सुध कर चित्त । च०॥२२
मुनिगण पार न पाइयो सुरा, मैं तुच्छ बुद्धि किम कहूं जी बखान । च०
बार बार बिनती करूं तुम्हा, करुणानिधि मोकूं करि निज दास । च०
भविजन जो मुनि गुण धरैं मनां, पद पूजत श्रीगुरु बारंबार । च० ॥
मुनिस्वरूपको ध्यायकै मनां, वह उतरैजी भव-दधि पार । च० । २६

कबित्त छंद ।

जे तपसूरा संयम धीरा सिद्धिवधू अनुरागी,
रत्नत्रय मंडित कर्म विहंडित ते ऋषिवर बड़भागी ।
सूरि उपाध्याय सर्वसाधु त्रय पद धारक सबत्यागी,
पूज करत हूं भगति भावतें तुम स्वरूप लव लागी ॥ २७ ॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्वसाधुत्रयपदधारकातीतानागतवर्तमानकालसंबंधि

सर्वमुनीश्वरेभ्यः पुष्टितुष्टिशांतिकरेभ्योऽनेकरोगशोकाधिव्याधिडाकिनीभूतप्रेतव्यंतरादिदुष्टग्रहदुष्टग्रहगर्वनिग्रहविनाशकेभ्यः सुभिक्षऋद्धिवृद्धिविभवानेकवितरणेभ्यः सर्वगुणीश्वरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो या पूजा करै करावै सुर धरि गावै,
अति उछाह कर जिनमंदिरमें मंडल मंडावै ।
देखै अरु अनुमोद करै जो भव्य निरंतर,
तिनके घरतें सर्व विघन भय नसै निरंतर ॥

इत्याशीर्वादः ।

दोहा ।

संवत शत उनवीस दश, श्रावण सप्तमि श्वेत ।
सरूपचंद मुनि भक्तिवश, रची स्वपर हित हेत ॥

चौसठ ऋद्धि पूजा अर्थात् वृहद्गुरावलिपूजाशांतिकविधान संपूर्णम् ।

पूजा, विधान, माहात्म्य आदि।

भाषा-पूजा-पाठ।

भाषा पूजासंग्रह–इसमें अभिषेक पाठ, पंचामृताभिषेक पाठ, देवशास्त्रगुरुकी समुच्चयपूजा, विद्यमान विंशति तीर्थंकर पूजा, देवपूजा, सरस्वतीपूजा, गुरुपूजा, तीनलोकसम्बन्धी अकृत्रिम चैत्यालयपूजा, सिद्धचक्रपूजा, पंचमेरुसम्बन्धी जिन चैत्यालयपूजा, नन्दीश्वरद्वीप (अष्टाह्निक) पूजा, सोलहकारण पूजा, दशलक्षण पूजा, रत्नत्रय पूजा, निर्वाणक्षेत्रपूजा, समुच्चय चौवीसी पूजा, सप्तऋषी पूजा, स्वयंभूस्तोत्र, शांतिपाठ, विसर्जनपाठ, स्तुतिपाठ–ये सब भाषाके है। मूल्य ।।।)

नित्यपूजा–इसमें लघुअभिषेक (पंचामृत प्रक्षालन) संस्कृत, देवशास्त्र गुरुपूजा संस्कृत प्राकृत, देवशास्त्र गुरुपूजा भाषा, वीसतीर्थंकरपूजा भाषा, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालयोंको अर्घ संस्कृत–प्राकृत, सिद्धपूजा संस्कृत, सिद्धपूजाका भावाष्टक संस्कृत, सोलहकारण दशलक्षण रत्नत्रय धर्मोके अर्घ भाषा, पंचपरमेष्ठी जयमाला प्राकृत, शान्तिपाठ संस्कृत, विसर्जन संस्कृत और स्तुतिपाठ भाषा हैं। मूल्य ।⁻)

वर्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा–कविवर वृन्दावनजीकृत। यह चोवीसी विधान है। मूल्य १=) कपड़ेकी पक्की जिल्दका १।=)

सत्यार्थ यज्ञ–कवि मनरंगलालकृत वर्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा विधान। पदलालित्य, अर्थकी गंभीरता, तत्वचर्चाका सार और भक्तिरसपूर्ण हृदयरंजक कवितापर मुग्ध होकर बाबू अजितप्रसादजी वकीलने इसे गुटका आकारमें प्रकाशित किया है। सुन्दर कपड़ेकी जिल्दसहितका मूल्य ॥)

तीसचौवीसी पूजा—ढाई द्वीपके दशक्षेत्र सम्बन्धी भूत भविष्यत् और वर्तमान कालकी तीस चौबीसीका कविवर वृन्दावनदासजीकृत पूजाविधान। मूल्य २) कपड़ेकी पक्की जिल्दका २।)

चौसठ ऋद्धि पूजा-अर्थात् **बृहद् गुनावली पूजा शांतिक विधान**-यति श्रीस्वरूपचंदजी विरचित। मूल्य ।।।)

कर्मदहन विधान—प० टेकचन्दजी कृत। मूल्य ।≤)

पञ्च कल्याणक पाठ—प० रूपचन्दजी कृत विधान। मूल्य ।=)

पूजाविधान संग्रह—इसमें लघु पञ्चकल्याणक, लघु पञ्चपरमेष्ठी, लघुकर्मदहन, सम्मेदशिखर पूजा और चतुर्विंशतिक्षेत्रके विधानोंका संग्रह है। मूल्य ।=)

दीपमालिका विधान—दिवालीके दिन नवीन बहियोंके आरम्भ करनेकी विधिसहित। मूल्य -)

जिनेन्द्र पंचकल्याणक मंगल—अन्वयार्थ भावार्थादि सहित। मूल्य ≤)

जिनेन्द्र पञ्चकल्याण मंगल-भाषा अभिषेक पाठ और पञ्चामृताभिषेक पाठसहित। मूल्य ७॥-॥)

पञ्च मंगल—मूल पाठ। मूल्य -)

पञ्च कल्याणक पाठ—बाबू जगमोहनजी द्वारा रचित। मूल्य -)

संस्कृत पूजापाठ।

प्रतिष्ठा सारोद्धार-प० आशाधरजी मूल और प० मनोहरलालजीकृत सटीक भाषा। मूल्य कच्ची जिल्द १॥।) और कपड़ेकी पक्की जिल्द २)

पञ्चपरमेष्ठी पूजा-श्रीयशोनन्दि आचार्यकृत। मूल्य ।)

शान्तिचक्र मण्डल-जेष्ठ, पूजा, स्थापन विधि और अर्थसहित। मूल्य ॥)

नित्यपूजाविधान—इसमें देवशास्त्र गुरुपूजा, विहरमानविंशति तीर्थंकरपूजा, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालयसम्बन्धी अर्घ, सिद्धपूजा, सिद्धपूजाका भावाष्टक, सोलहकारण—दशलक्षण—रत्नत्रयके अर्घ, पंचपरमेष्ठीके अर्घ, शांतिपाठ और विसर्जनके संस्कृत प्राकृत पाठ हैं । मूल्य ≈)॥

भाषा माहात्म्य ।

श्रीबृहद्सम्मेदशिखरमाहात्म्य—श्रीलोहाचार्यविरचित संस्कृत ग्रन्थका ब्रह्मचारी मनसुखसागरकृत भाषा छन्दानुवाद । मूल्य १।)

श्रीसम्मेदाचलपूजा—पं० जवाहरलालजीकृत पूजा और श्रीधर्मदास क्षुल्लककृत भाषा वचनिकामें माहात्म्य । मूल्य ।)

श्रीसम्मेदशिखरमाहात्म्य विधान—पं० जवाहरलालजीकृत चौबोला दादरा, इत्यादि गानेकी नाना तर्ज़ और चालोंमें । इसमें श्रीसम्मेदशिखरजीका फोटो भी लगा है । मूल्य ≈)

श्रीसम्मेदशिखरमाहात्म्य—श्रीधर्मदासजी क्षुल्लककृत भाषा वचनिकामें । मूल्य ~)

श्रीगिरनार माहात्म्य—कविवर हजारीमल्लजीकृत पूजाविधान । मूल्य ॥~)





सब जगहके छपे हुए सब तरहके
जैनग्रन्थोंके मिलनेका पता:—

जैनसाहित्यप्रसारक कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव—बम्बई।

